ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 24 जून 2018 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 24 जून 2018 से 30 जून 2018

जयेष्ठ शु. – 12 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 25, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 195 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

हंसराज महिला महाविद्यालय जालंधर में वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह

श्री नवजोत सिंह ने किया क्रिकेट अकादमी का उद्घाटन

हंसराज महिला महाविद्यालय, जालन्धर में कॉलेज का **'वार्षिक पारितोषिक वितरण समारोह'** का आयोजन किया गया। समारोह में श्री नवजोत सिंह सिद्धू मुख्यातिथि स्वरूप उपस्थित हुए (स्थानीय निकाय मंत्री, पंजाब), मुख्य अतिथि श्री सतीश कुमार शर्मा, डायरेक्टर (कालेजिज्) डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, जस्टिस श्री एन के सूद (रिटायर्ड) उप–प्रधान, डी.ए.वी. कॉलेज मैनेजिंग कमेटी व चेयरमैन स्थानीय समिति, श्री अरविन्द घई, सचिव, डीएवी कॉलेज मैनेजिंग कमेटी, के साथ मिलकर ज्ञान व आलोक की प्रतीक ज्योति का प्रज्ज्वलन किया। तद्पश्चात् डीएवी गान प्रस्तुत किया गया। प्राचार्या डॉ. (श्रीमती) अजय सरीन ने कॉलेज की वार्षिक रिपोर्ट प्रस्तुत कर संस्था की विशिष्ट एवं प्रशंसनीय उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

मुख्यातिथि श्री नवजोत सिंह सिद्धू ने अपने वक्तव्य में एच.एम.वी के प्रांगण में आकर स्वयं को गौरवान्वित अनुभव किया। उन्होंने अपने जीवन के विभिन्न अनुभवों के माध्यम से बताया कि उन्नति का आधार आत्मविश्वास है। जीवन संघर्षमय है इसे आनन्द से जीयें, तभी सफलता प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा जीवन सरल नहीं हैं, संघर्षमय है। संघर्ष तुम्हारा गहना है जो तुम्हें सर्वगुणी बनाता है। मुश्किल समय आपको संवारता है। उन्होंने कहा युवाशक्ति देश का भविष्य है आपकी शिक्षा व कौशल आपको आत्मनिर्भर बनाता है उसके लिए उन्होंने सत्य मार्ग पर चलते हुए अपने गन्तव्य को प्राप्त करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कालेज के विकास के लिए 20 लाख रुपये के अनुदान की घोषणा की। मुख्यातिथि ने अपने करकमलों से एच.एम.वी. क्रिकेट अकादमी का शुभारंभ किया।

जस्टिस श्री एन के सूद (रिटायर्ड) उप–प्रधान, डीएवी कॉलेज मैनेजिंग कमेटी नई दिल्ली व चेयरमैन स्थानीय समिति ने मुख्यातिथि का स्वागत किया एवं पुरस्कृत छात्राओं को प्रोत्साहित करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। डॉ. सतीश कुमार शर्मा, डायरेक्टर (कालेजिज्) ने अपने संभाषण में एचएमवी की प्रगति पथ पर अग्रसर करने में प्राचार्या डॉ. अजय सरीन, टीचिंग व नॉन टीचिंग स्टाफ की सहभागिता की सराहना की। इस अवसर पर लगभग 247 छात्राओं को सम्मानित किया गया जिसमें 92 स्वर्णपदक, 30 रजत पदक, 15 कास्य पदक वितरित किए गए। इन पुरस्कारों में अकादमिक, जनरल, यूथ वैल्फेयर, एनसीसी, एनएसएस एवं विद्यार्थी परिषद् के पुरस्कार भी शामिल रहे। अन्त में श्री अरविन्द घई सचिव, डीएवी कॉलेज मैनेजिंग कमेटी ने मुख्यातिथि एवं गणमान्य सदस्यों का धन्यवाद किया।

डी.ए.वी. एचसीएल विद्यालय मलांजखण्ड में महात्मा हंसराज जयंती

डी.ए.वी. एचसीएल विद्यालय मलांजखण्ड में महात्मा हंसराज की जयंती हर्षोल्लास पूर्व मनाई गई। इस अवसर पर विशेष हवन यज्ञ का आयोजन हुआ। विद्यालय के प्राचार्य श्री आर.पी. मिश्रा एवं समस्त शिक्षकों ने महात्मा हंसराज की प्रतिमा पर श्रद्धासुमन अर्पित किए।

प्राचार्य महोदय ने महात्मा हंसराज के जीवनवृत्त, देशभक्ति, सादा जीवन उच्च विचार से प्रेरणा लेने की छात्रों को सीख दी। इस अवसर पर विद्यालय के छात्रों ने समूह गान के माध्यम से महात्मा हंसराज जी को याद किया। कार्यक्रम का संचालन श्री रावेन्द्र जायसवाल ने प्राचार्य महोदय के निर्देशन में किया। इस अवसर पर विद्यालय के समस्त शिक्षक–शिक्षिकाओं एवं छात्रों की उपस्थिति रही।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – **पूनम सूरी**

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 24 जून 2018 से 30 जून 2018

हे सोम! हृदय–कलश में प्रवेश करो

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

पवस्य सोम देववीतये वृषा, इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमाविश।
पुरा नो बाधाद् दुरितति पारय, क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते।।

ऋग् ९.७०.९

ऋषिः **रेणुः वैश्वामित्रः।** देवता **पवमानः सोमः।** छन्दः **जगती।**

● **(सोम)** हे सोम परमात्मन्! **(तू)**, **(वृषा)** वर्षक **(होता हुआ)**, **(देववीतये)** दिव्य गुणों की प्राप्ति के लिए, **(पवस्य)** प्रवाहित हो, **(इन्द्रस्य)** आत्मा के, **(हार्दि)** हृदय–रूप, **(सोमधानं)** सोम–कलश में, **(आविश)** प्रविष्ट हो।, **(बाधात्)** बाधे जाने से, **(पुरा)** पहले, **(नः)** हमें, **(दुरिता अति)** पापचरणों से लंघाकर, **(पारय)** पार करदे। **(क्षेत्रवित्)** मार्ग का ज्ञाता, **(विपृच्छते)** विशेषरूप से पूछनेवाले के लिए, **(दिशः)** दिशाओं को, **(आह हि)** बताता ही है।

● हे रसागर सोम परमात्मन्! तुम 'वृषा' हो, रस की वर्षा करनेवाले हो। तुम दिव्य गुणों के रस के साथ मेरे अन्दर प्रवाहित होवो। तुम आत्मा के हृदय–रूप सोम–कलश में आकर प्रविष्ट होवो। मेरा आत्मा न जाने कब से सोम–पान के लिए उत्कंठित हो रहा है, उस प्यासे की तृषा को दूर करो। तुम कामवर्षी हो, मेरी कामना को पूर्ण करो। तुम आनन्दवर्षी हो, मुझपर आनन्द की वर्षा करो।

कभी–कभी मेरा आत्मा 'दुरितों' से घिर जाता है। पाप–भावनाएँ उसे आगे बढ़ने से रोकती हैं। पाप–कर्म उसे निगलने के लिए तैयार रहते हैं। आसपास का पापमय वातावरण उसे पाप–मार्ग पर चलने के लिए प्रलोभित करता है। ऐसे समय में हे मेरे सोम प्रभु! क्या तुम खड़े देखते ही रहोगे? क्या तुम मुझे 'दुरितों' से ग्रसा जाने दोगे? क्या तुम मुझे पाप–ताप के प्रहारों से छलनी हो जाने दोगे? क्या तुम मुझे दुराचार–रूप शत्रुओं से आक्रान्त हो जाने दोगे? नहीं, तुम मेरे उद्धारक होकर आओ। इससे पहले कि 'दुरित' मेरे आत्मा पर प्रभुत्व पायें, उसे पतनोन्मुख करें, तुम त्वरित गति से मेरे पास आ जाओ और मुझे उन दुरितों से लंघाकर पार कर दो। संसार का यह नियम है कि जो 'क्षेत्रवित्' है, मार्ग का ज्ञाता है, वह पूछनेवाले को दिशा बताता ही है। तुमसे बढ़कर 'क्षेत्रवित्' बढ़कर मार्गज्ञ अन्य कौन है! अतः हे मेरे सोम प्रभु! मैं तो तुम्हीं से दिशा पूछता हूँ। मैं दिग्भ्रान्त हो रहा हूँ, तुम कुतुबनुमा यन्त्र की सुई बनकर मुझे दिशा दर्शाओ। यदि तुमसे दिशा–ज्ञान न मिला, तो मेरा जीवन–पोत भव–सागर में डूबकर नष्ट–भ्रष्ट हो जायेगा। हे प्रभु! मुझ भूले को सही राह दिखाओ, मुझ भटके को गन्तव्य लक्ष्य पर पहुँचाओ।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

बोध कथाएँ

● महात्मा आनन्द स्वामी

स्वामी जी ने **'प्रभु में पूर्ण विश्वास'** पर कथा सुनाते हुए कहा प्रभु में जिस इंसान का अचल, शुचि श्रद्धा और विश्वास होता है वह कभी विफल और निराश नहीं होता। **'ईश्वर सर्वव्यापक है'** पर कथा सुनाते हुए कहा इस शरीर में जिस प्रकार आत्मा प्रत्येक कार्य को चलाता हुआ शरीर का स्वामी बनकर बैठा है, वैसे ही इस संसार में, सारे संसार को चलाता हुआ ईश्वर संसार का स्वामी बनकर प्रत्येक वस्तु के अन्दर विद्यमान है। इन्द्रियों के पर्दे को हटाकर जिस प्रकार आत्मा के दर्शन होते हैं, इसी प्रकार प्रकृति के पर्दे को हटाकर ईश्वर का दर्शन होता है।

आगे पढ़ेंगे तीन लघु कथाएँ

खुदा को भूल गए हैं लोग

एक था बालक। उसके पिता बीमार थे। माँ ने कहा–''बेटे! तेरे पिताजी के सिर में बहुत दर्द है। ये पैसे ले, बाज़ार से जाकर एस्प्रीन ले आ।''

बालक ने पैसे लिए, चला बाज़ार को। मार्ग में बन्दरों का तमाशा हो रहा था। उसे देखने लगा। दस मिनट, पन्द्रह मिनट, आधा घण्टा, एक घण्टा व्यतीत हो गया। जब तक तमाशा हो रहा था। तब तक हिला भी नहीं। तमाशा समाप्त हुआ तो फिर चला दवाई लेने के लिए। परन्तु उस दिन शहर में शायद तमाशों का दिन था। दुकान से काफी इधर देखा कि नट बाँस पर चढ़कर खेल दिखा रहा है। उसको देखने लगा। मग्न हो गया उसमें, भूल गया सब–कुछ।

घर में पिता दर्द से तड़प रहे थे। माँ को चिन्ता होने लगी कि लड़का कहाँ गया? बड़ा बेटा आया तो उससे बोली–''तनिक बाज़ार में जाकर तो देख, बहुत देर हो गई तेरे भाई को गए हुए। कहीं कोई दुर्घटना न हो गई हो! इधर तुम्हारे पिता तड़प रहे हैं, उनके लिए ओषधि लेने भेजा था, उधर उसका पता नहीं। तुम जाकर पता करो।''

बड़ा भाई बाज़ार में गया तो देखा कि छोटे सरकार नट का खेल देख रहे हैं। इस प्रकार मग्न कि किसी की सुध ही नहीं। बड़े भाई ने डाँटते हुए कहा–''अरे मूर्ख! तुझे औषधि लेने के लिए भेजा था या नट का खेल देखने के लिए?''

यदि आप बड़े भाई के स्थान पर होते तो आप भी उस बालक को मूर्ख कहते। वास्तव में ही वह मूर्खता की बात कर रहा था।

परन्तु यदि वह मूर्ख था, तो हम क्या हैं? अरे, हम भी तो इस आत्मा के रोग की औषधि लेने के लिए संसार के बाज़ार में आए थे और यहाँ आकर भूल गए तमाशों में। आँखों ने सौंदर्य को देखा, जिह्वा ने रसों को चखा, कानों ने गीतों को सुना और तमाशे होने लगे हमारे सामने– आज मकान बन रहा है, अब विवाह हो रहा है, यह पेट ही चैन नहीं लेने देता प्रातः से सायं तक। वर्ष के आरम्भ से वर्ष के अन्त तक–लगातार, जब तक यम के रूप में बड़ा भाई नहीं आता, हम इस तमाशे में मग्न रहते हैं। जीविका कमाओ, प्रातः कमाओ, सायं कमाओ। इसे आजीविका से छुटकारा नहीं मिलता।

खुदा को भूल गए लोग फ़िक्रे–रोज़ी में।
ख़याले–रिज़्क है, राज़क का कुछ ख़याल नहीं।।

दु:खों से घबराओ नहीं

महाभारत के युद्ध के बाद कृष्ण भगवान् जब द्वारिका को वापस जाने लगे तो कुन्ती से बोले– "माँ! कोई और भी सेवा है क्या?"

कुन्ती बोली "हाँ भगवन्! ऐसी कृपा करो कि हम पर कष्ट–क्लेश आते ही रहें।"

भगवान् कृष्ण ने पूछा– "ऐसी बातें क्यों माँगती हो?"

कुन्ती ने कहा–"जब–जब कष्ट आता है, तब–तब ही आपके दर्शन होते हैं। इसीलिए कहती हूँ– कष्ट आते ही रहें, तो अच्छा है।"

दु:खों से घबराओ नहीं। याद रखो कि वह सब–कुछ देखने वाली माँ, वह महान् कृपा वाली महाशक्ति, हर समय तुम्हें देखती रहती है, हर समय तुम्हारे दु:खों को दूर करने के लिए तैयार है।

देव! मुझे ही सब दुख दे दे,
जग–जन सारे सुख पाएँ।
औरों के जो कलुष–भोग हों,
इस जन के ऊपर आएँ।

द–दमन, दान, दया

प्रजापति के पास एक बार देवता, असुर और मनुष्य तीनों इकट्ठे होकर पहुँचे। प्रजापति ने पूछा– "कहो भाई! कैसे आना हुआ?"

देवताओं, असुरों और मनुष्यों ने कहा–"हम उपदेश लेने आए हैं।"

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

गतांक से आगे–

क्रान्तिद्रष्टा : ऋषि दयानन्द

● डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री

ईसा की उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े वैदिक तार्किक और दार्शनिक विचारक स्वामी दयानन्द सरस्वती को अपने जीवन में जिन तीन प्रबल शक्तियों का सामना करना पड़ा, वे थीं–(1) ब्राह्मण वर्ग जिसने हिन्दू समाज में अपने को सर्वोच्च स्थान पर प्रतिष्ठित कर लिया था। (2) ईसाई मिशनरियों का संगठित समूह जिसने हिन्दुओं के धर्म–परिवर्तन को अपना पवित्र कर्त्तव्य मान लिया था। (3) इस्लाम का सक्रिय हिन्दू धर्म–विरोधी प्रचार अभियान जिसे वे गोपनीय ढंग से और कभी–कभी खुले रूप में बराबर चला रहे थे।

(1). स्वामी दयानन्द के समय में हिन्दू धर्म की दशा यह थी कि वेदों और उपनिषदों की सीधी–सरल शिक्षाओं का स्थान आडम्बरों, अनगिनत देवी–देवताओं की पूजा, पशुओं की बलि, लम्बे समय तक चलनेवाले धार्मिक मेलों, जुलूसों, तीर्थयात्राओं, अनेकानेक मन्दिरों में मूर्तियों के सामने घण्टा–घड़ियाल, धूप–दीप, नैवेद्य तथा मन्त्रोच्चारण की पद्धतियों ने ले लिया था, जिसे इन्हें सुननेवाले तो क्या, इन्हें बोलने वाले भी नहीं समझते थे। हिन्दू धर्म में ब्राह्मणों की एकछत्र सत्ता थी, उन्हें धार्मिक विषयों में सर्वोच्च स्थान प्राप्त था, अन्य जातियों का कोई महत्त्व ही नहीं था। ब्राह्मण ईश्वर के प्रतिनिधि समझे जाते थे और बाकी लोगों को उनकी इच्छाओं के अनुसार चलना पड़ता था। विशाल हिन्दू समाज में उसी का वर्चस्व था, परम्पराओं और सामाजिक प्रथाओं का वही एक नियामक था। समस्त हिन्दू जीवन–पद्धति, हिन्दू धर्म–दर्शन और हिन्दू देवी–देवताओं के बारे में वेदों तथा शास्त्रों के वचन नहीं अपितु ब्राह्मणों की बात ही प्रामाणिक थी। धर्म की व्याख्या से लेकर हिन्दुओं के संस्कारों तथा विविध सामाजिक और आर्थिक पक्षों का भी ब्राह्मण ही एक अकेला नियन्ता था। धर्म में तरह–तरह के कर्मकाण्ड रचे गये थे और इनका उपयोग ब्राह्मण अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए करते थे। पापों से मुक्ति और मृत्यु के पश्चात् सद्गति पाने के लिए उन्होंने अनेक प्रकार के रहस्यपूर्ण विधि–विधानों को गढ़ा था। इसके अलावा वेदों के अध्ययन पर ब्राह्मण का एकाधिकार था। शूद्र वेदपाठ सुन नहीं सकता था।

वेदपाठ सुनना उसके लिए जघन्य पाप था। अन्य जातियाँ वेद–मंत्र सुन सकती थी, पर वेद का अध्ययन उनके लिए भी वर्जित था। लेकिन क्या ब्राह्मणों को स्वयं भी वेदों का ज्ञान था? बिल्कुल नहीं। उन्हें विविध अवसरों पर बोले जाने वाले वेदमंत्र याद भर थे। वेदार्थ का विचार करना कौन कहे अधिकांश ब्राह्मणों को चारों वेदों के नाम भी मालूम नहीं थे। प्रचलित हिन्दू धर्म में मूर्तिपूजा और कठोर जाति–प्रथा दो ऐसी चीजें थी, जिन्होंने हिन्दू समाज को अंधकार के गर्त में झोंककर उसे टुकड़ों–टुकड़ों में बाँट दिया था। जाति–प्रथा ने हिन्दुओं के बहुमुखी विकास को अवरुद्ध कर दिया। जातियों के अलावा प्रत्येक जाति अनेक उपजातियों में बँटी हुई थी। ऐसे टुकड़ों में बँटे समाज को किसी न किसी दिन गिरना ही था, भले ही उसमें कितनी ही अच्छाइयाँ क्यों न हों।

(2) स्वामी दयानन्द के समय तक ईसाई धर्म–प्रचारकों की शक्ति भी बहुत बढ़ गयी थी। हिन्दुओं की कठोर जातिप्रथा, बाल–विवाह, मूर्तिपूजा जैसी बुराइयों का उदाहरण देकर ईसाई प्रचारकों ने हिन्दू धर्म और हिन्दू सामाजिक संस्थाओं पर आक्रमण किया हुआ था। डॉ. अलेक्जेण्डर डफ के नेतृत्व में पादरी लोग भारतीयों को ईसाई बनाने में लगे हुए थे। उनका प्रचार–कार्य विशेषरूप से कलकता, मद्रास और बम्बई में पूरे ज़ोर पर था। भारतीयों को ईसाई बनाने की दिशा में पहले कदम के रूप में पूरे ज़ोर पर था। भारतीयों को ईसाई बनाने की दिशा में पहले कदम के रूप में देशी भाषाओं के मुकाबले अंग्रेज़ी का वर्चस्व स्थापित करने का अंग्रेज़ों की सरकार ने फैसला कर लिया था। डॉ. डफ और मैकाले के प्रभाव में आकर लार्ड विलियम बैंटिक की सरकार ने अंग्रेज़ी साहित्य के प्रसार को ब्रिटिश सरकार का प्रमुख लक्ष्य निर्धारित किया। मिशनरियों ने भारत में अंग्रेज़ी शिक्षा प्राप्त भारतीयों का एक ऐसा वर्ग तैयार किया जो पाश्चात्य संस्कृति और विचारों से प्रभावित था। राजा राममोहन राय के नेतृत्व में ब्राह्मसमाज ने आधुनिक यूरोप, विशेष रूप से इंग्लैंड के आधुनिक समाजिक आदर्शवाद को सराहना शुरु कर दिया था। इसका प्रभाव यह पड़ा कि अनेक भारतीयों ने अपने पूर्वजों के धर्म को छोड़कर ईसाई बनना शुरु कर दिया। मिशनरियों ने राजा राममोहन राय तक को ईसाई बनाने की कोशिश की थी। ईसाई लोग अपने को भारतीयों से श्रेष्ठ समझते थे। मिशन स्कूलों में बच्चों को बताया जाता था कि भारतीयों के ऊपर यूरोपियनों की श्रेष्ठता का कारण ईसा मसीह की कृपा का प्रसाद है। ईसाई धर्म–प्रचारक हिन्दू समाज की बुराइयों की आलोचना करते हुए गर्व से बताता था कि उसका समाज इन अभिशापों से मुक्त है। ईसाई धर्म ग्रन्थों की हिन्दू धर्मग्रन्थों से तुलना करते हुए वह यह बताता था कि प्रभु ईसा का मार्ग ही श्रेष्ठ है। वे वेदों की निन्दा करते हुए यह कहते थे कि उनमें केवल मूर्खतापूर्ण कर्मकाण्ड बताये गये हैं। किंतु भारतीय समाज ईसाई मिशनरियों के इस धर्म–परिवर्तन–अभियान के विरूद्ध था। हिन्दू धर्म छोड़कर ईसाई बनने वाले व्यक्ति के बारे में समझा जाता था कि वह अपने पूर्वजों के धर्म से ही विमुख नहीं हुआ, बल्कि अपने पूरे समाज से विमुख हो गया। ऐसा माना जाता था कि जो व्यक्ति ईसाई बनता है वह गोमांस और मंदिरा का भी सेवन करता है। आधुनिक शिक्षा से शिक्षित यूरोपीय वेश–भूषा से मण्डित जो युवक ईसाई धर्म ग्रहण करते थे, वे अपने पूर्वजों (शंकर, विष्णु, इन्द्र प्रभृति देवों और कृष्ण) के आचरण से (जो पूराणों में वर्णित है) अपने को हीन–भाव ग्रस्त और लज्जित महसूस करते थे।

3. इस्लाम ने भी हिन्दू धर्म पर जेहाद बोल रखा था। वह हिन्दू धर्म की आलोचना अत्यंत कठोर भाषा में करता था। वह मूर्तिपूजा तथा वैदिक और पौराणिक कर्मकाण्ड की निन्दा करता था। वे हिन्दुओं की जातीय सामाजिक व्यवस्था के भी उग्र आलोचक थे। मिशनरियों की भाँति इस्लाम ने भी हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का प्रयत्न जारी रखा था। छह सात सौ वर्षों की इस्लामी शासकों की नीतियों के कारण स्वामी जी के समय में मुसलमानों की आबादी देश में दस करोड़ से ज्यादा हो गई थी। ईसाइयों के भारत आगमन से सैकड़ों वर्ष पूर्व इस्लाम के मुजाहिदीन भारत आ चुके थे। एक हाथ में तलवार और दूसरे हाथ में कुरान लेकर हिन्दुओं को मुसलमान बनाने का अभियान सम्पूर्ण भारत खण्ड (आर्यावर्त्त) में (आज के अफगानिस्तान, पाकिस्तान, बंगलादेश सहित भारत में) एक –तिहाई मुस्लिम आबादी का आकार ले चुका था। स्वामी जी के समय में हिन्दुओं और मुसलमानों का परस्पर वैमनस्य भी अंग्रेज़ों की कूटनीति के कारण बहुत बढ़ चुका था। (आगे चलकर इसकी परिणति भारत–विभाजन के रूप में हुई)। भारत सरकार के खुफ़िया विभाग की रिपोर्ट और गोपनीय सरकारी कागजात से पता चलता है कि अंग्रेज़ी हुकूमत मुसलमानों को हिन्दुओं को लूटने और गाली देने के लिए उकसाती थी।

स्वामी जी ने हिन्दू धर्म की तत्कालीन मान्यताओं तथा ईसाइयों और मुसलमानों की गतिविधियों को बहुत ही गहराई से देखा व समझा था। उन्होंने अपने शास्त्रीय अध्ययन वेद विद्या पर असाधारण अधिकार, योगनिष्ठ तपोमय जीवन और निष्कलंक ब्रह्मचर्य शक्ति के बल पर उपर्युक्त तीन प्रबल विरोधी शक्तियों से अकेले ही लोहा लिया। गुरु विरजानन्द सरस्वती से प्राप्त आर्ष ग्रंथों के पाण्डित्य ने उन्हें हिन्दू धर्म के मूल 'वेदविद्या' तक पहुँचा दिया। चारों वेदों को पर्याप्त समय तक विचार–विमर्श करने के बाद ऋषि दयानन्द इस परिणाम पर पहुँचे कि यदि भारतीय धर्म (वैदिक) को शुद्ध किया जा सके तो किसी विदेशी (ईसाई और इस्लाम) धर्म के लिए यहाँ कोई स्थान नहीं रह जाएगा। वेदों, उपनिषदों तथा गोतम, कणाद कपिल, पतञ्जलि और व्यास के मौलिक दर्शन शास्त्रों से आलोकित दयानन्द के हृदय में बाइबिल, कुरान और पुराणों के लिए कोई श्रद्धा नहीं बची। 'वेदों की ओर लौटो' की उनकी तुमुल ध्वनि एकबारगी सम्पूर्ण आर्यवर्त्त में गूँज गई। स्वामी जी के मन में ऐसे लोगों और मत–मतान्तरों के लिए कोई स्थान नहीं था, जिन्होंने पिछले दो–तीन हजार वर्षों के दौरान भारतीय वैदिक धर्म के पतन में (पौराणिक धर्म के रूप में परिवर्तित होने में) योगदान दिया था। स्वामी जी के गुरु ने उन्हें यह शिक्षा दी थी कि **''बहुत समय से भारतवर्ष में वेदों की शिक्षा देना बन्द हो गया है। जाओ, वेदों और वैदिक शास्त्रों की शिक्षा दो और उनके प्रकाश से उस अंधकार को दूर करो, जिसे मिथ्या धर्मों (मत–मतान्तरों के अर्थ में) ने फैलाया है।''** अतः दयानन्द ने वेदों के संदेश को प्रचारित–प्रसारित करना प्रारंभ कर दिया। इस प्रकार स्वामी जी द्वारा हिंदू धर्म के सुधार आंदोलन ने एक सकारात्मक रूप ग्रहण किया। वैदिक धर्म के बारे में स्वामी जी के ओजस्वी प्रवचनों तथा शास्त्रार्थों ने दुधारी तलवार का काम किया। उसने जहाँ हिन्दू धर्म को अन्धविश्वासों के मकड़जाल से मुक्त किया वहाँ ईसाइयों और इस्लाम मतावलम्बियों द्वारा धर्म परिवर्तन की वेगगती धारा को भी रोका। परमात्मा के इकलौता पुत्र होने तथा मुक्तिदाता और परित्राता के रूप में हजरत ईसा मसीह के व्यक्तित्व और कृतित्व पर स्वामी जी ने तार्किक आक्षेप किये। इस्लाम के अंतिम पैगम्बर हजरत मोहम्मद साहब की जीवन शैली, जन्नत, दोजख और काफिरों के संदर्भ में कुरान की युक्ति–शून्य आज्ञाओं की भी स्वामीजी ने खिल्ली उड़ाई। इसके साथ ही स्वामी जी ने ब्राह्मण धर्म को भी चुनौती दी। उन्होंने उचित ही उद्घोष किया कि तीर्थ यात्रा और गंगा स्नान का कोई धार्मिक महत्त्व नहीं है। देवी–मन्दिरों में पशुबलि एक पापपूर्ण कृत्य है।

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

विश्व की प्रथम आर्य समाज

● आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री

सन् 1882 और 1883 में महर्षि ने स्वयं भी इस भूमि को अपने निवास से पवित्र किया था। तदनन्तर उनके शिष्य स्व. गिरजानंद जी भी कई वर्षों तक यहाँ रहे। सन्1894 से 1913 इस्वी के आखिर तक स्वामी नित्यानंद जी एवं स्वामी विश्वेश्वरानन्द जी इस समाज मन्दिर के ऊपर की कोठरी में रहते रहे। बाद में श्री स्वामी ओंकार सच्चिदानंद जी इसी कोठरी में रहते रहे और वेद प्रचार आदि का कार्य करते रहे। अब यहाँ इसी स्थान पर श्री स्वामी विशुद्धानंद जी महाराज यदा कदा विराजमान रहे हैं। स्वामी जी बाहर जाते रहते हैं परन्तु यहाँ पर वे पुनः आ जाते हैं। इस प्रकार यह इस समाज की परम्परा रही कि वह योग्य सन्यासियों और विद्वानों की सेवा करता रहा। वर्तमान और आगे आने वाले अधिकारी भी इस परम्परा का ध्यान रखें– इसी में गौरव है।

आर्य समाज बम्बई ने कुछ साहित्य भी प्रकाशित किया और उसके पास कुछ आवश्यक प्रामाणिक रजिस्टर, पुस्तकें आदि भी सुरक्षित हैं। ऐसा ज्ञात हुआ है कि इस समाज ने सर्व प्रथम लीथो पर अथर्ववेद संहिता का प्रकाशन किया था। सन् 1906 में स्वामी नित्यानंद जी महाराज ने यही इसी समाज में रहकर वेद पदानुक्रमणी भी प्रकाशित की थी।

श्री पं. विजयशंकर जी ज्ञानी की मृत्यु के बाद उनकी अंग्रेजी पुस्तक जिसकी भूमिका स्वयं इन पंक्तियों के लेखक ने लिखी है, 'फिलोसोफी ऑफ क्रियेशन' भी इसी समाज द्वारा प्रकाशित की गई। आर्यसमाज काकड़वाड़ी का इतिहास भी पहले छपा था। एक पुस्तक जिसका नाम न्याय कुसुमांजलि है और स्वर्गीय पं. जगदीशचन्द्र जी शस्त्री द्वारा लिखित है, यह भी इस समाज से प्रकाशित हुई है। अन्य छोटे मोटे ट्रैक्ट और पुस्तकें भी समय पर प्रकाशित होते रहे हैं।

इस समाज के पास सन् 1878 से 1883 तक के साप्ताहिक अधिवेशन की कार्यवाही का एक रजिस्टर सुरक्षित है। इसका उल्लेख मैंने अपनी पुस्तिका 'आर्य–समाज की स्थापना तिथि' में किया है। यह पुस्तिका सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली से छपी है। इस सभा में भी इस रजिस्टर की फोटो कापी मैंने ही कराकर सुरक्षित रखवा दी है। इस रजिस्टर में जहाँ साप्ताहिक अधिवेशन की कार्यवाहियाँ लिखी गई हैं वहाँ महर्षि द्वारा विभिन्न विषयों पर अधिवेशन में दिये गये व्याख्यानों का संक्षेप मे उल्लेख भी है। यह बहुत ही उपयोगी रजिस्टर है। बड़े प्रयत्न से यह ढूंढ कर निकाला गया था।

इसके अतिरिक्त महाराज लायवल केस के निर्णय की पुस्तक भी यहां पर सुरक्षित है। इसी के साथ इस केस की प्रतिक्रिया में जो पुस्तक प्रकाशित की गई थी वह भी सुरक्षित है। दोनों पुस्तकें अंग्रेजी में हैं। इन पुस्तकों को प्राप्त करने और खोजने के लिए मैने सार्वदेशिक सभा के अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष पद पर रहते हुये स्वर्गीय श्री. पं. ऋषिमित्र शास्त्री और उस समय के अधिकारियों को प्रेरित किया था। फलतः ये पुस्तकें प्राप्त हुई थीं। यह घटना भी एक विचित्र ही घटना है। भड़ोच में भागवत केस आर्य समाज के उपदेशक श्री पं. वेदमित्र ठाकुर के खिलाफ़ चल रहा था। यह समस्त भारतीय आर्य समाज संघटन के लिए एक विकट समस्या और प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया था। उस केस मे विजय प्राप्त करने और कराने का श्रेय भी इन पंक्तियों के लेखक को ही है। मेरे कोर्ट मे दिये जाने वाले वक्तव्य के समय पुस्तकों को निशान लगाकर उन्हें मेरे कहने पर पुस्तक खोल कर दिखाने और पुस्तक को प्रस्तुत करने का कार्य श्री पं. ऋषिमित्र शास्त्री को दिया गया था। उनके ही सहयोगी श्री पं. रुद्रमित्र शास्त्री और श्री पं. दयाशंकर शर्मा थे। इस केस में मैंने महाराज लायवल केस का भी हवाला दिया था। परन्तु गुजराती की एक छोटी पुस्तिका मात्र प्राप्त थी। मैंने उस केस मे विजय प्राप्त करने के बाद श्री पं. ऋषिमित्र जी शास्त्री से इस के फ़ैसले को ढूंढ़कर प्राप्त करने को कहा था। सार्वदेशिक सभा से भी मैंने ऐसा करने के लिये कई बार लिखा पढ़ी की थी।

इस केस में भी जहाँ समस्त आर्य जगत्, सार्वदेशिक सभा, मुम्बई प्रान्तीय सभा की बड़ी दिलचस्पी थी, वहाँ आर्यसमाज मुम्बई के अधिकारियों ने भी बड़ी सन्लग्नता दिखायी। बम्बई समाज के ही उस समय के अधिकारी श्री अमृतलाल करसन जी पटेल, श्री समाजित सूर्यवली मिश्र और श्री कान्तीलाल मोहनलाल शर्मा ने वड़ोदा में आकर मर्माहत शब्दों, अति नम्रता और भद्रता के साथ मुझसे प्रार्थना की कि मुझे इस केस में आर्य समाज की प्रतिष्ठा की रक्षा करनी चाहिए। इस समय यह कार्य मुझे हर अवस्था में करना चाहिए। मैंने उन्हें उत्तर दिया था कि जब आप लोगों का मुझ पर यह विश्वास और श्रद्धा है तो अवश्य इस में मैं आर्य समाज को विजयी बना दूंगा। इन तीनो महानुभावों की मानसिक स्थिति और भावमुद्रा जो उस समय थी आज भी वह मेरे स्मृतिपथ में समय पर आ जाया करती है। लाहौर ब्राह्ममहाविद्यालय जिस का मैं आचार्य था, उसी के एक पूर्व स्नातक स्वर्गीय पं. माधवेन्द्र जी शास्त्री जो मुझे अपना गुरू मानते थे इस घटना के साक्षी थे। वे अपने जीवन काल मे इस घटना को सुनाकर कभी कभी स्मृति को जागृत करते रहते थे। मेरे ही शिष्य श्री पं. दयाशंकर शर्मा जो इस केस के आदि से अन्त तक की घटनाओं के प्रत्यक्ष साक्षी हैं, इन सब बातों को भली प्रकार जानते हैं।

बम्बई आर्यसमाज के भी चढाव और उतार के अनेकों समय इस लम्बे काल में आये, जिसका लोगों ने सामना किया। परन्तु एक बात ध्यान देने की है कि आर्य समाज एक सार्वभौम संघटन है। यह जिस धर्म को मानता है वह सब के लिए है। वह कुछ व्यक्तियों के ही लिए नहीं है। भगवान दयानन्द ने मानवमात्र के लिए इसका दरवाज़ा खुला रखा था। यदि इस द्वार को कोई बन्द करता है तो यह महर्षि के प्रतिकूल आचरण करता है।

बम्बई आर्य समाज के वर्तमान अधिकारीगण ऐसे है कि जिनसे कुछ पुराने लोग भी है। समाज के हित ही नहीं उसके सार्वभौम हित को भी उन्हें ध्यान में रखकर कार्य करना चाहिये इसी से उनका गौरव होगा। ऐसी कोई चीज़ नहीं होनी चाहिए कि जिससे उनके कार्यकाल के मूल्यांकन में किसी प्रकार का बट्टा लगे। हम जो कुछ भी करें इस बात को ध्यान में रखकर करें कि आगे इसका परिणाम बुरा तो नहीं होगा। कहीं यह आर्य समाज के महान् अस्तित्व का विघातक तो नहीं होगा। कोई कार्य ऐसा तो नहीं किया जा रहा है जिससे ऋषि के विचार और सिद्धान्तों को क्षति पहुँचती हो।

वर्तमान अधिकारियों में श्री जी.के. नन्दवाणा, श्री नटवरलाल जी भांवसार, श्री दयाशंकर सिंह और श्री चन्द्रकाल राजाट्रस्टियों में श्री वसन्तराय पटेल आदि हैं। इनके विषय में यहां कुछ लिखना प्रथा के विपरित है। ये वर्तमान अधिकारी हैं। इनके कार्यकाल का तो पृथक् उल्लेख होगा ही। इन से इतना ही कहना है कि व्यापक हितों और अस्तित्व को देखकर कार्य करना चाहिए। ये सभी मुझसे बहुत लम्बे समय से परिचित है। आशा है ये इस संकेत को मानकर महर्षि के मिशन को बढ़ाने में तत्पर रहेंगे। मैं यह भी कहूंगा कि समाज में विद्वानों को भी स्थान दिया जावे जिससे पुराने गौरव और परम्परा की रक्षा होती रहे।

इसी समाज के सदस्यों में श्री सेठ प्रताप सिंह शूर जी वल्लभदास भी हैं। वे इसके प्रधान भी रह चुके हैं। उनकी अपनी सूझबूझ और कार्य दक्षता हैं। उन्हें भी इस समाज के कार्यों में सक्रिय भाग लेकर मार्गदर्शन करते रहना चाहिए। वे एक ऐसे व्यक्ति हैं कि जिनकी तीन पीढ़ियों का इस समाज से सम्बन्ध रहा है। समाज बढ़े, फले फूले और संसार से अज्ञान–तिमिर का विनाश होकर वेद का प्रचार हो।

☞ पृष्ठ 03 का शेष

क्रान्तिद्रष्टा : ऋषि ...

वैष्णवों के महान् धार्मिक ग्रन्थ भागवत पुराण अनैतिक है। मूर्तिपूजा वेदसम्मत नहीं, एक धर्माडम्बर मात्र है, जिससे ईश्वर प्राप्ति का कोई सम्बंध नहीं है, यह जन्म–मरण चक्र से मुक्ति के मार्ग में सीढ़ी नहीं बल्कि एक गहरी खाई है जिसमें गिरकर मनुष्य अपना जीवन व्यर्थ गवाँता है।

दयानन्द के विचारों से ब्राह्मणों में बड़ा क्षोभ व्याप्त हुआ और वे उनकी कटु आलोचना करने लगे। किंतु ब्राह्मणों के आक्रमण से दयानन्द का आन्दोलन दब नहीं सका। स्वामी जी ने मूर्तिपूजा के साथ–साथ बहुदेवतावाद का भी प्रबल खंडन प्रारंभ किया। उन्होंने यह बताया कि वेद, वेदान्त दर्शन और उपनिषदों में परमेश्वर (ब्रह्मा) में जिन गुणों का होना बताया जाता है, उन गुणों से युक्त केवल एक ही ब्रह्मा है और वह सच्चिदानन्दस्वरूप निराकार, सर्वशक्तिमान, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर–अमर, अभय, नित्य पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करनी योग्य है (आर्यसमाज का द्वितीय नियम)।

दयानन्द ने यह भी अनुभव किया कि ब्राह्मणों ने जो अपना गढ़ खड़ा कर लिया है, वही हिन्दू धर्म में घुसी बुराइयों की जड़ है। अतः उन्होंने बिना किसी लाग–लपेट के स्पष्ट सत्य बोलकर इस गढ़ की जड़ों को हिला डालने का संकल्प लिया। उन्होंने केवल जन्म के आधार पर प्राप्त ब्राह्मणों के अधिकार पर सवालिया निशान लगाये। जब ब्राह्मणों ने अपने अधिकारों को तर्कसंगत बताने के लिए शास्त्रीय प्रमाण का सहारा लिया तो स्वामी जी ने स्वयं ही मनुस्मृति का प्रमाण देकर यह सिद्ध किया कि ब्राह्मण को वेदों का ज्ञाता होना चाहिए और जो व्यक्ति इस स्तर तक नहीं पहुँच पाता, वह ब्राह्मण कहलाने के योग्य नहीं है।

ऋषि दयानन्द और समाज से साभार

जेल के अंदर की रोचक घटनाएं

● स्व. श्री बलराज भल्ला

शोर, *पन्दये नारूह ने ज़खम पर नमक छिड़का।
आप से कोई पूछे तुमने क्या मज़ा पाया।।

(*उल्टी नसीहत देने वाले)

जिस समय का न्यायालय–संबंधी वर्णन मैं पिछले परिच्छेद में कर आया हूँ, उसी अरसे में जेल के अंदर कई एक ऐसी घटनाएँ हुईं, जो शायद पाठकों को रोचक प्रतीत होंगी।

हमारा चाबी–बरदार ज़मादार एक रोज़ दारोगा से दो–चार हो गया। हमारी भी सख्ती मुआफ़ हुई, जान खलास हुई, बॉस बदला गया और एक दूसरा ज़मादार हम पर नियुक्त हुआ। जिस तरह यह खुदाबख़्श प्रात:काल ही नित्यप्रति अपने खुदा को याद किया करता था, ईश्वर हम सब को ऐसी याद से कोसों दूर रखे। जो शख़्स अब आया था, वह किसी कदर लालची, पर बहुत दर्जे तक भलामानुस था। उसका सलूक आदमियों का सा था और अक्सर हमको देने के लिए जितने फल उसको दिये जाएँ, उनमें से आधे पहुँचाने में मदद किया करता था।

जब पहले–पहल फल अंदर आने की आज्ञा मिली, तो मैंने इससे फायदा उठाने से इंकार कर दिया। कारण, मैं सोचता था थोड़े दिनों के बाद जेल में फल कौन देगा? इसलिए अब अपना स्वाद बिगाड़ने की क्या आवश्यकता है? कुछ दिन बाद पिताजी से मिलने का मौका हुआ। उन्होंने बतलाया कि यह वास्तविक आत्मिक बल का इजहार नहीं। वस्तुत:, वह मनुष्य सयंमी कहला सकता है, जो मिलने पर सात्त्विक सुखों का भोग कर सकता है और उनके दूर हो जाने पर अपने मन को व्यथित नहीं करता। इसके बाद मैंने फल इत्यादि का व्यवहार आरंभ कर दिया और फैसला होने तक बहुधा इन पर ही निर्भर रहता। इन दिनों ज्यों–ज्यों केस ख़तरे के निकट आता गया, हमें अधिक से अधिक मिलने का सुभीता मिलता गया। एक रोज़ तो साहिब फर्माने लगे 'टुम रोज़–रोज़ अपने वारसों से मिल सकते हो। शायद टुम्हे फांसी हो जायेगा।'' अभी ऐसा होने में एक से अधिक साल बाकी था। आप कभी भी हमारी शुभचिन्तना में किसी से पीछे न रहते थे। एक बार हम सब ने जज साहिब से प्रार्थना की कि हम कई महीनों से एकांतवासी हो रहे हैं, अब हमें एक बारक में इकट्ठा कर दिया जाए। केस खत्म होने वाला है। एक दूसरे से मिलने का भय तो अब न होगा। आपने 'हाँ' कहकर मालूम नहीं, साहिब को क्या लिख दिया, दूसरे दिन जेल के साहिब हम सब पर सवार होने लगे और कहने लगे "टुम इकट्ठा होना चाहटे हो, ऐसा कभी नहीं हो सकटा। हम उस खूनी को एक जगह खुला रख सकटा हैं। पर तुम में से किसी को इकट्ठा नहीं कर सकता। टुम बहुट खतरनाक है।' हमको यह सुन कर छुट्टियों के दिन पहाड़ नजर आने लगे।

इन दिनों भी पुलिस ने हमारा पीछा नहीं छोड़ा। वह सुलतान चंद को सरकारी गवाह बनाने में सफल हो गई थी, इसलिए अब भी कभी एक के पास और कभी दूसरे के पास जाती और बातचीत करती। न मालूम क्यों सब मेरे पर अधिक कृपा करती। एक रोज़ जज साहब कोठरी खुला कर अंदर आ गये और मेरे से बड़े प्रेम–पूर्वक बातचीत करने लगे। आपकी बातचीत सहानुभूति से परिपूर्ण थी और कहीं से भी उसमें से स्वार्थ की बू नहीं आती थी। इधर–उधर की बातचीत के बाद आप मुझ से पूछने लगे ''तुम्हे क्या दु:ख है, मुझे बतलाओ, मैं नि:संदेह तुम्हारी सहायता करना चाहता हूँ।'' मैंने उत्तर दिया ''कोई विशेष दु:ख नहीं।'' जवाब में कई बार पूछे जाने पर भी अपना कोई दु:ख वर्णन न किया। तो कहने लगे ''खाने का कैसा हाल है? तुम तो अच्छे–अच्छे खाने खाते आये हो।'' ''नि:संदेह'' मैंने उत्तर दिया। ''परंतु यह खाना भी ऐसा खराब नहीं कि खाया न जा सके। मैं आपकी सहानुभूति के लिए आपका मश्कूर हूँ।''

''नहीं, मश्कूर होने की कोई बात नहीं।'' स्टड ने फिर कहा ''तुम बतलाओ, मैं तुम्हारे लिए क्या कर सकता हूँ? जो कुछ मेरे से बन सका, मैं करने का प्रयत्न करूँगा।''

''कुछ नहीं।'' मैंने एक स्पार्टन की माफ़िक कहा।

''आजकल सख्त गर्मी है।'' अपने विषय को जारी रखते हुए साहिब ने कहा ''क्या मैं तुम्हारे लिए बाहर सोने का प्रबंध करूँ।''

मैं इस अप्राकृतिक बातचीत से तंग आ गया। मैं समझता था, साहब मेरा निर्बल स्थान देखना चाहते हैं और फिर उसी स्थान पर आक्रमण कर मुझे गिराना चाहते हैं। ऐसी बनावटी मेहरबानी को तोड़ने के लिए मैंने उत्तर दिया ''साहब, तुम मेरे लिए कुछ नहीं कर सकते। जो कुछ कानून कर सकता है, वह मुझे मिल रहा है। इससे बाहर कानून का उल्लंघन कर तुम मेरी कोई सहायता नहीं कर सकते।'' अब तो साहब भी अपनी पोचा–पोची कायम न रख सके। अपने आंतरिक भावों को छुपाने में असमर्थ हो बोल उठे ''बलराज, जब तुम जेल से बाहर आयोगे, नि:संदेह सबसे पहले मेरे ऊपर बम फैंकोगे?''

मैं इसका उत्तर क्या दे सकता था? मैंने मुस्कुराते हुए कहा–''साहब, तुम्हें मुझसे कोई डर नहीं, क्योंकि तुम जानते हो मैं ऐसा आदमी नहीं। यह केवल तुम्हारी ज़मीर है, जो तुम्हें भयभीत कर रही है।'' साहब बहादुर कोठरी से बाहर निकल गये और फिर कभी मेरे निकट अकेले नहीं आये।

जेल के साहब नित्यप्रति नौ बजे आया करते थे। एक रोज छुट्टी के दिन आप लगभग सात बजे ही आ गये। आप और आपके अर्दलियों ने मुझे कई बार पुकारा। मैं संध्या कर रहा था, इसलिए मैंने कोई उत्तर न दिया। साहिब झुँझला उठे। दारोगा ने समझाया कि वह खुदा को याद कर रहा है, कभी जवाब न देगा। आप मेरे ऊपर एक खास आदमी नियत करके चले गये। जब मैं संध्या से फ़ारिग हो गया, तो मुझे कपड़े पहनने के लिए कहा गया और बतलाया गया कि साहब बहादुर दफ्तर में याद कर रहे हैं। मैंने समझा, अब साहब मुझे छोड़ कर मेरे खुदा पर भी तसल्लत (स्वामित्त्व) जमाना चाहते हैं। शायद इस बात से नाराज़ हैं कि उसकी दरगाह को छोड़ कर हमारी आवाज़ पर हमारे सामने क्यों हाज़िर नहीं हुआ। मैं स्वाभाविकतया प्रसन्न हुआ, अगर इसी पर मामला तय हो जाए तो और क्या चाहिए। मैं झट कपड़े पहन कर तैयार हो गया। पहरेदार मेरी तालाशी लेकर मुझे साथ लिवा ले गया। मैंने सामने होते ही कहा ''साहब, गुड मॉर्निंग।'' आप न जाने क्यों, अपनी भाषा के मुकाबले में देसी 'सलाम' को अधिक पंसद करते थे? मेरा ख्याल था आपकी जलती हुई क्रोधाग्नि इससे और भी भड़क उठेगी। परंतु यहां तो कुछ माज़रा ही और था। आपने मुस्करा कर अपनी भाषा में 'गुड मॉर्निंग' कह कर उत्तर दिया। मैं हैरान था आप अपना प्रण तोड़कर मुझे से अंग्रेज़ी में क्यों संवाद करने लगे हैं और फिर सिर हिला देने की जगह जुबान से मेरे आदाब को क्यों स्वीकार किया है? मैं अभी इस बात का हल सोच ही रहा था कि आपने अंग्रेज़ी में पूछा–''क्या तुम मिस एशवर्थ को जानते हो?'' मिस साहिबा मिंटो होम की एक नौजवान नर्स थीं और राजकुमारों की सेवा के लिए मेरे साथ कश्मीर में रहा करती थीं। आप ही ने एक रोज़ बाहर से आकर मुझे बतलाया था कि लाहौर में एक बम चल गया है और आप ही ने मुझे 'सिविल मिलिटरी गज़ट' लाकर उसके सम्बंध का पैरा सुनाया था। मैंने उत्तर दिया ''जी''। साहब ने मुस्करा कर कहा ''वह आजकल यहाँ है और तुमसे मिलना चाहती है, तुम्हारा क्या इरादा है?'' मैंने उत्तर दिया–''उसकी मेहरबानी है, पर मैं इन हालात के अंदर एक स्त्री से मिलना नहीं चाहता।'' इसके बाद साहब अपनी देसी भाषा में बात करने का रवैया भूल गये और अक्सर अंग्रेज़ी में बात–चीत करने लग गये।

पुलिस ने एक बार फिर अंतिम आक्रमण करने का संकल्प किया। कोई छुट्टी का दिन था। मैं अपनी कोठरी में टहल रहा था। बाहर का दरवाजा खुला। पीटरी और स्टड साहब अंदर आ घुसे। मैं भी दरवाजे के निकट आ अया। 'सलामालेकम' के बाद पीटरी ने उपदेश शुरु किया।

''बलराज, तुम अब बच्चे नहीं हो। तुम्हारी आयु छोटी नहीं, तुम अपनी गिनती आदमियों में शुमार किया करो।'' सचमुच इन शब्दों ने मेरी आंखों से एक अज़ीब पर्दा दूर कर दिया। मैं अभी तक अपने आप को एक कॉलेज का विद्यार्थी समझता था। आज तक मैं हर एक के सामने अपने आप को केवल एक अपरिपक्व युवक समझता था। आज सहसा इन शब्दों ने मुझे जाग्रत अवस्था में कर दिया। सहसा मेरे अन्दर से एकाएक निर्बलताएँ दूर हो गयी। सहसा मुझे अपने आप पर असीम भरोसा होने लगा और मुझे ऐसा अनुभव होने लगा, मानों अकस्मात किसी ने मेरा बाजू पकड़ कर मुझे निद्रादेवी की गोद में से खींचकर जाग्रत कर दिया है। मैं एक नया जीवन प्राप्त कर पीटरी को दत्तचित होकर सुनने लगा। ''तुम अब कड़े पंजों में फंसे हुए अपनी रक्षा का कोई उपाय करो।'' पीटरी ने अपनी बात खतम करते हुए कहा।

''आप ही कोई तरीका सजेस्ट कीजिए।'' मैंने उत्तर दिया।

''ऐसे संकट के समय सबसे अधिक बुद्धिमान् वह है, जो रासबिहारी का अनुसरण करता है। वह तुम सबमें से अधिक बुद्धिमान् है। सब कुछ कर–करा कर भाग गया है और अभी तक हमारे हाथ नहीं आया।''

''नि:संदेह। भागना उसको चाहिए, जिसने कोई अपराध किया हो। मुझे इसकी क्या आवश्यकता है?'' मैंने पूछा।

''खैर, इस बात पर तो विवाद ही व्यर्थ है'' पीटरी ने कहा'' तुम हमारे पंजे में इस तरह हो जैसे चिड़ी बाज़ के, अब तो तुम्हारे लिए श्रेष्ठतम पथ का अनुसरण ही असंभव है। अब तो तुम्हारे लिए केवल श्रेष्ठतर पथ ही बाकी है और वह यह है जिसका अनुसरण दीनानाथ कर रहा है। यदि तुम इन दु:खों से बचकर अपने शरीर की रक्षा करना चाहते हो, तो तुम्हारे लिए इस पथ से बेहतर और कोई रास्ता नहीं। हम तुम्हारी सहायता के लिए तैयार है।''

''बहुत अच्छा।'' मैंने बनावटी गंभीर स्वर में कहा ''मैं भी तैयार हूँ।

दोनों ने एक दूसरे के मुँह की तरफ देखा, दोनों के चेहरे खिल उठे। एक ने झट

पैंसल की नोंक कागज़ के ऊपर धर कर कहा "कहो"।

मैंने कहा "अच्छा लिखो, मैं बिल्कुल निर्दोष हूँ। जो कुछ अभियोग मेरे विरुद्ध चला जा रहा है, सब झूठ है।"

दोनों दांत पीसते हुए, मेरी तरफ देखने लग गये। एक ने कहा, "वाह, तुम हमारे साथ हँसी करते हो, सच-सच बतलाओ।"

"मैंने तो सच-सच बतला दिया है। अब जो तुम कहो, वह लिखवा देता हूँ।

पीटरी ने अपनी जेब से एक चिट्ठी निकाल कर पूछा "भला, बाबूराम कौन है?"

"मैं क्या कह सकता हूँ। बीसियों बाबूराम हैं।" मैंने उत्तर दिया। "जिनका ज़िकर तुम्हारी चिट्ठी में आता है?" पीटरी ने पूछा। "मुझे कैसे याद हो सकता है कौन सी चिट्ठी है? ज़रा चिट्ठी तो दिखलाओ।" यह कहते हुए मैंने अपना दायां हाथ जंगले से बाहर बढ़ाया। पीटरी एक कदम पीछे हट गया और बोला "वाह, चिट्ठी ही हज़म करना चाहते हो?"

मैंने हँसते हुए कहा "नहीं, दूर-दूर से ही दिखला दो।"

"हमें मालूम नहीं था, तुम इतने चालाक ओर खतरनाक हो। नहीं तो हम तुम्हारा बंदोबस्त 1909 से ही कर लेते।" स्टड कहता हुआ मेरे मुँह की ओर देखने लगा। मानों मेरे भावों को जानना चाहता हो।

"बेशक" मैंने बाकी बात सुनने के लिए कह दिया।

"उस वक्त हम समझते थे तुम यूँ ही छोटे से भोले-भाले बच्चे हो। हमने तुम्हें कोई विशेष आदमी नहीं समझा।"

"निःसंदेह" मैंने आश्चर्यचकित होकर कहा। "क्या तुम अजीतसिंह को जानते हो? स्टड ने पूछा।

"कई बार अखबारों में उसका नाम पढ़ा है।" मैंने उत्तर दिया। "तुम हमसे छुपाने का प्रयत्न क्यों करते हो? हमारे पास तुम्हारी लिखते मौजूद हैं।"

"फिर मेरे से पूछने की क्या ज़रूरत है? एक-आध कागज़ दिखला कर मेरी भी तसल्ली कर दो।"

"अजीतसिंह से तुम ने छह सौ रुपया क्यों लिया?" स्टड ने पूछा।

"मैंने कभी नहीं लिया।" मैंने उत्तर दिया। "हमारे पास वह रजिस्टर मौजूद है, जिसमें तुम्हारे नाम छह सौ रुपया लिखा हुआ है।"

"तब और क्या चाहिए कचहरी में पेश करो, तुम्हारी चांदी है।"

"यही तो तुम्हारी चालाकी है, तुम्हारी जगह किसी और ने दस्तख़त किए हुए हैं। इसीलिए तो तुम दिल ही दिल में कूद रहे हो।"

मैं दिल ही दिल में कूद तो अवश्य रहा था, परन्तु इसलिए नहीं कि मेरी जगह किसी और ने दस्तख़त किये हुए हैं, बल्कि इसलिए कि मैं जानता था मैंने अजीतसिंह से कभी कुछ नहीं लिया। वे अपना मतलब हल करना चाहते थे। मैं समझता था यह भी समय कड़ाई का है। "इससे बेहतर तुम्हारे लिए और क्या हो सकता है?" मैंने कहा। "उस आदमी को पेश करो, जिसने मेरे लिए दस्तख़त किये हैं।"

"हम अच्छी तरह उसका नाम नहीं पढ़ सकते।"

"तुम्हारी किस्मत" मैंने सहानुभूति प्रकट करते हुए उनसे कहा।"

स्टड साहिब का हाथ तो खाली गया, अब पीटरी की गोलाबारी शुरू हुई।

"यह यंगमैन्ज़ आर्यसमाज ट्रैक्ट सोसाइटी क्या है?" उसने पूछा।

"एक धार्मिक सभा।"

"धार्मिक? हम खूब जानते हैं। टट्टी की ओट में शिकार खेलना किसे कहते हैं?"

"इसमें जानने-न-जानने की बात ही क्या है? सोसाइटी के रजिस्टर तुम्हारे पास हैं, लेखा साफ़ है, तुम सब कुछ खुद देख सकते हो।"

"मुझे सब कुछ मालूम है। अब तुम्हारी ट्रैक्ट सोसायटी तो न चली, मैं इसकी खबर ठीक तौर से ले लूंगा।"

"तुम्हारा अख़्तयार है।" मैंने उत्तर दिया। "पर ऐसा करने से तुम अंग्रेज़ी सरकार के नाम पर एक धब्बा लगाओगे और मज़हबी मामलात में दखल देने से फ़ायदा न उठाओगे।"

यह वार दूर का था, सो खाली गया। अब आप एक कदम और आगे बढ़े और नज़दीक से चोट की। इससे मेरे सुलगते हुए सीने की आग भड़क उठी। एक घंटा पहले मैं इस नये वार का जवाब किन शब्दों में देता है, मैं नहीं कह सकता। परन्तु अब मेरे कानों में गूंज रहा था "तुम बच्चे नहीं हो।" मैं अपनी गणना "मनुष्यों" में कर रहा था। इसलिए मुझे मनुष्यों की-सी शान्ति और सहन-शीलता दिखलानी पड़ी।

"मैं एक बात तुम से पूछना चाहता हूँ, " पीटरी ने कहा "अगर तुम धर्म, ईमान से सच-सच बतलाओ।"

"पूछो। मैंने कहा।

"क्या यह सब मामला तुम्हारे पिता जी को मालूम था?"

क्या ही चतुरता और नीचता से भरा हुआ प्रश्न था। कोई भी साधारण पुरुष आसानी से अपने दिये हुए उत्तर के जाल में फंस सकता था। कोई कुछ ही जवाब क्यों न दे, अगर एक तरफ़ सिर पर पहाड़ है, तो दूसरी तरफ़ नीचे खाई है। सवाल क्या था दोधारी तलवार थी, जिस तरफ़ से चलो, कट जाओ। "हाँ" कहो तो पिता जी को फंसाओ, न कहो तो अपने आपको भाड़ में झोंको। "जब मैं ही निर्दोष हूँ, तो पिता जी को इसका ज्ञान कैसे हो सकता है?" मैंने उत्तर दिया।

"नहीं, नहीं, ऐसा नहीं" बात काट कर स्टड ने कहा, "हम लंबा बयान नहीं चाहते। दो लफ़्जी जवाब दो- 'हां' कहो या 'न'।"

"तुम्हारे प्रश्न का उत्तर हां या न में नहीं दिया जा सकता।" मैंने कहा।

"तुम हमें कुछ नहीं बतलाते, दुःख पाओगे।" पीटरी ने कहा।

"अगर तुम्हारा इन्साफ़ यही कहता है, तो मैं लाचार हूँ।"

"अच्छा, अगर तुम कुछ न बतलाओगे" पीटरी ने धमकी देते हुए कहा "तो हमें तुम्हारे बाप की खबर लेनी पड़ेगी।" इससे अधिक धमकी मेरे लिए और क्या हो सकती थी। अभी तो सदा के लिए मैं अपनी माता से जुदा हो चुका हूँ। क्या ये लोग अपनी धमकी को पूरा करेंगे? मेरा मन ऐसी बात सोचने को असमर्थ था। क्या ये लोग मुझे तंग करने के लिए ऐसी नीचता कर सकते हैं? अगर नहीं, तो मेरे अल्ले जख्मों पर क्यों नमक छिड़क रहे हैं? आंखे अश्रुधारा बहाने के लिए तैयार थीं। कानों में आवाज़ उठी "तुम अब बच्चे नहीं हो।" मन संभला और डट कर कहा "मैं नहीं मानता, ब्रिटिश इन्साफ़ इतना गिर चुका है।"

पीटरी ने सोचा, यह बाण तो रह गया। अब कोई इससे भी तीक्ष्ण अस्त्र चलाना चाहिए। मेरी समझ में इससे तीक्ष्ण-तर अस्त्र और कोई हो ही नहीं सकता। खैर, यह तो हुई अपनी-अपनी समझ की बात। हर एक दूसरे को अपनी आंखों से देखता है। एक गौरांग के लिए 'अहं' के सामने माता-पिता की हैसियत नहीं हो सकती, जो एक आर्य के लिए है।

"तब तुम हमारी सलाह से फ़ायदा उठाने से इन्कारी हो?" पीटरी ने पूछा।

"कदापि नहीं। मैं तो बयान देता हूँ, तुम न ही लिखते हो और न कुछ बतलाते ही हो।"

"अच्छा बलराज, पीटरी ने गम्भीर स्वर से एक ठंडा सांस लेते हुए और अपना मुँह बाहर की फेरते हुए कहा, "अगर फांसी नहीं, तो आने वाले कई सालों के लिए जंगले के दूसरी तरफ़ रहोगे।"

"मुझे ब्रिटिश न्याय में तुम्हारे से अधिक विश्वास है।" मेरे से ये शब्द सुनते हुए दोनों कोठरी से बाहर से बाहर निकल गये।"

बाहर का दरवाज़ा बन्द हो गया। मैं टहलता-टहलता इस सोच में डूब गया, क्या मुझे सचमुच ही ब्रिटिश न्याय में उनसे अधिक विश्वास है? यह कैसे हो सकता था? मेरे पर 302 दफ़ा का लगाव, कचहरी का रोज़ाना बरताव, मेरे अन्दर ब्रिटिश न्याय के लिए कैसे विश्वास रहने दे सकता था? यह सब कुछ तो कहने की बात थी।

इसी प्रकार समय व्यतीत होने लगा। हम भी जेल की कार्रवाइयों से धीरे-धीरे वाफ़िक होने लगे। 8 सितम्बर तक कचहरी का लाग-लपेट ख़त्म हो गया। जज साहिब फैसला लिखने के लिए सिमले के ठंडे पहाड़ों पर चले गये और कह गये कि पांच अक्टूबर को फ़ैसला सुनाया जाएगा। यह समय भी जैसे-तैसे कटने लगा। जब अकेले बैठे-बैठे बहुत दिल उकता जाता, तो ऊँचे-ऊँचे नज़दीक की कोठरी वाले से बातचीत करने लगते। कभी-कभी ज़मादार आ निकलता और पेशी* (किसी कसूर के लिए जब कोई कैदी सज़ा के वास्ते साहिब के सामने पेश किया जाता है, तो जेल में इसे पेशी कहते हैं।) का डरावा देता, हम चुपके हो जाते। ज्यों ही वह दो कदम आगे निकलता, हम बातचीत फिर शुरू कर देते। हफ्ते में एक-आध मुलाकात हो जाने से दिल बहला रहता और बाहर का समाचार मिलता रहता। आखिर 5 अक्टूबर की सुबह हो गई। स्नान-ध्यान कर मैं कचहरी के लिए तैयार हो गया। मिनट-मिनट मुश्किल से कटने लगा। दस बजे गये, बारह बज गये, किसी को बाहर न निकाला। आखिर तंग आकर खड्डी पर लेट गया। कई प्रकार के विचारों ने घेरा। दाईं आंख फड़कने लगी। दिल में पुराने भ्रमों का संचार हो आया। क्या ईश्वर अपनी इच्छाओं को मनुष्य पर प्रकट करने के लिए उसके अंगों की सहायता लेते हैं? यह सब भ्रमजाल है; इन बातों पर विश्वास करना मूर्खता है। मन में ऐसा निश्चय किया। मन की गति अद्भुत है। जब इसे किसी की अत्यन्त ही आशा व प्रतीक्षा होती है, तो यह छोटी-छोटी बातों में शगुन-अपशगुन ढूँढ़ने लगता है। मनुष्य चाहे कैसा ही महान् क्यों न हो, आकांक्षा के समय किसी दैविक बल का आश्रय चाहता है। यह नियम प्राकृतिक है। ये भाव हर देश, स्थान और जाति में पाये जाते हैं। एक बार तो ये भाव उत्पन्न होते ही हैं, चाहे अन्त में वे क्यों ही न दबा लिए जाएँ। इसी प्रकार की सोच-विचार में मगन धीरे-धीरे मुझे निद्रादेवी ने आ आलिंगन किया और नार्टन के शब्द कानों में गुंजायमान होने लगे।

देहली-बम-रहस्योद्घाटन से साभार

शिक्षा का स्वारस्य

● भद्रसेन

शिक्षा, विद्या, ज्ञान, शिक्षण आदि शब्द सामान्य स्तर पर एक ही अर्थ में लिए जाते हैं। अनेकत्र विद्या की आँख, प्रकाश, धन, दर्पण, वाहन, सोमापन आदि से उपमा दी गई है, जिसका मूलभाव यही है कि जैसे ये–ये साधन अपने–अपने क्षेत्र में अपनी–अपनी सफलता, सिद्धि, प्रगति कराने में सहायक होते हैं। ऐसे ही उस क्षेत्र का ज्ञान सिद्धि दायक होता है। वस्तुतः विद्या माता–पिता, पत्नी जैसे निकटतम सम्बन्धियों के समान हितकारी है। यह एक ऐसा धन है, जिसको न तो कोई कभी कहीं छीन सकता है और न ही यह किसी प्रकार के भार–भव–भ्रम का कारण बनती है। यह ऐसी अनोखी सम्पत्ति है, जो बाँटने पर बढ़ती है तथा कंजूसी करने पर कम ही होती है। शिक्षा के सर्वविध महत्त्वों को सामने रख कर ही कहा जाता है कि विद्या ही जीवन–प्रकाश–प्रगति, सिद्धि, आनन्द, धर्म, सत्य, एकता, शक्ति है और अविद्या इस से विपरीत है।

तैत्तिरीय उपनिषद् के प्रथम भाग को शिक्षा वल्ली कहा जाता है। जिसमें तत्सम्बद्ध तत्त्वों का तात्त्विक चित्रण है। इस उपनिषद् तथा कठ उपनिषद् में मंगलाचरण के रूप में एक मंत्र पढ़ा गया है, जिसमें शिक्षा के स्वास्थ्य को सर्वांगीण रूप से स्पष्ट किया गया है। इसके संबंध में–

न किल्बिषमत्र नाधारो अस्ति न यन्मित्रैः सममान एति।
अनूनं निहंत पात्रं न एतत् पक्तारं पक्वः पुनराविशाति।। अ. 12.3.48

शब्दार्थ : **अत्र**=इस कर्मफल की व्यवस्था में **किल्बिषम्**=कोई कमी, दोष, त्रुटि न **अस्ति** = नहीं है और **न** = न ही **आधारः** = बचने, बचाव का कोई सहारा किसी प्रकार की किसी की पहुँच **अस्ति** = होती है। **यत्** = यह व्यवस्था **मित्रैः** = मित्रों के साथ **सम्–अममानः**= साँझी, बाँटी न **एति**= नहीं जाती है। **नः**= हमारी, अपनी–अपनी **एतत्**= यह **पात्रम्**=प्रक्रिया **अनूनम्**=न्यूनता रहित, कमी–दोष रहित, कमी–घटा के बिना अर्थात् पूर्ण **निहितम्**=स्थापित है, सुनिश्चित–सुरक्षित है। तभी तो **पक्तारम्** = पकाने, कर्म करने वाले को पक्वः= उस का पकाया हुआ, किया हुआ कर्म पूर्ण पक जाने पर **पुनः** = फिर यथा समय अपने कर्म के अनुसार फल के रूप में **आविशति**=मिलता है, प्राप्त होता है।

व्याख्या : नः एतत् पात्रं अनूनं निहितम्–हमारी यह न्याय प्रक्रिया सर्वदा–सर्वथा पूर्ण है। सुनिश्चित–सुरक्षित है। कर्मफल व्यवस्था के सम्बन्ध में वेदमंत्र का यह चरण कह रहा है, स्पष्ट कर रहा है, कि यह हर तरह से पूर्ण, सुनिश्चित सुरक्षित है। अतः प्रत्येक कर्म का कर्ता अपने कर्म के अनुरूप उस का यथायोग्य फल प्राप्त करता है। इसलिए हर कर्म का करने वाला अपने कर्म का फल स्वकर्मानुरूप ही भोगता है।

अत्र किल्बिषम् न अस्ति–इस व्यवस्थित न्याय प्रक्रिया में किसी प्रकार कमी, त्रुटि दोष नहीं है। जिस प्रकार दुनियावी न्यायालयों में अनेक प्रकार के अनेक व्यक्तियों द्वारा घोटाले किए जाते हैं। ऐसी अनेक घटनाएँ आए दिन सामने आती रहती हैं। हमारे समाज में ऐसी कहानियाँ प्रचलित हैं, जिन से यह सिद्ध किया जाता है, कि अमुक–अमुक पूजा–पाठ, यज्ञ–दान, जप–तप, भजन–कीर्तन से कर्मकर्त्ता अपने पूर्व कर्मों के फल भोगने से बच सकता है। कर्मफल में अंतर किया जा सकता है। ऐसे ही कुछ यह समझते हैं कि किसी विशेष देवदर्शन–पूजा से या कहीं विशेष तीर्थस्थान–यात्रा जैसे धार्मिक कर्म काण्ड से कर्मफल में परिवर्तन किसी प्रकार का किया जा सकता है। पाप से बचने के अनेक शास्त्रों के प्रमाण भी दिए जाते हैं। पुनरपि यहाँ कोई चोर दरवाजा, ढंग नहीं है। सच्चाई की वास्तविकता यही है – **अत्र आधारः न अस्ति**–कर्मफल व्यवस्था से बचने का कोई सहारा, किसी प्रकार की रिश्वत, किसी की पहुँच भी नहीं चलती है। अनेक समझते हैं कि गुरु अवतार, पीर–पैगम्बर विशेष विश्वास लाने से या उसकी बताई पूजा, मंत्र जाप आदि करने से कर्मफल से बचा जा सकता है। पर मंत्र का यह अंश निर्देश करता है कि कर्मफल व्यवस्था को टालने की किसी प्रकार की कोई आड़, ओट नहीं है। अतः किसी भी विशेष के आश्वासन पर हमें चलिका भरे किसी चोर दरवाजे, ढंग को ढूँढ लेने का भ्रम मन में नहीं पालना चाहिए। अतः किसी प्रकार की होशियारी द्वारा कर्मफल से बचने का धोखा किसी को भी मन में नहीं रखना चाहिए। यह ठीक है, कि दुनियावी न्यायालयों में लोग अनेक–अनेक प्रकार से पहुँच कर लेते हैं या रिश्वत का सहारा ले लेते हैं फिर स्पष्ट अपराध करने पर भी उन का बाल भी बाँका नहीं होता। पर वेद स्पष्ट कह रहा है कि परमात्मा की न्याय प्रक्रिया में कभी भी ऐसा नहीं होता।

मित्रै–सममानः न एति–मित्रों, परिचितों, रिश्तेदारों का पल्ला पकड़ कर कर्मफल से बचा नहीं जा सकता अर्थात् ये कर्मफल में भागीदार बन कर हिस्सा नहीं बढ़ा सकते हैं जैसे संसारी पैत्रिक संपत्ति में या दूसरों द्वारा अर्जित भौतिक वस्तुओं, सुविधा में भागीदार बन जाते हैं। वैसा कर्मफल व्यवस्था में नहीं होता। हमारे यहाँ कईं ऐसी ऐतिहासिक चर्चाएँ चलती हैं कि अमुक रिश्तेदार, मित्र, हितैषी, ने उसके कर्मफल में हिस्सेदारी कर ली। इतना कर्मफल का भोग उसने बढ़वा लिया। यह सब केवल चर्चा मात्र ही है, मन को समझाने का एक ढंग ही है। कर्मफल इस प्रकार दूसरों के गले में नहीं डाला जा सकता, मढ़ा नहीं जाता। यह तो हर स्थिति में स्वयं ही भोगना होता है।

मंत्र के अंतिम चरण में **'पक्तारं पक्वः पुनराविशाति'** शब्दों से ऊपर आई बातों को उदाहरण के साथ स्पष्ट कर दिया गया है। जैसे पकाने वाला पात्र में जो डालता है, पक कर वही वस्तु सामने आती है। जैसे जिस आटे की बनाई कच्ची रोटी तवे पर डाली जाती है। वही पक कर सामने आती है। यहाँ पक कर सामने आने तक का उदाहरण दिया है। अतः यह नहीं कहा जा सकता है कि उस पकी वस्तु के खाने से जैसे हिस्सेदार बन जाते हैं। ऐसे ही कर्मफल में भागीदारी करने का भाव नहीं लिया जा सकता। विशेषतः वाहनों की दुर्घटना में अनेक दुर्घटनाग्रस्त होते हैं। ये दुर्घटनायें सामयिक रूप में सामयिक जाँच, विवेक, विचार चाहती हैं। वह दुर्घटना सामयिक कारण से होती है। अतः चालक, यंत्र, सामने आई समस्या आदि दुर्घटना के कारण होते हैं। अनेकत्र ऐसे कारण स्पष्ट रूप में सामने होते हैं। अतः उन्हीं तक बात को सीमित रखना चाहिए। सामयिक घटना का सामयिक रूप से ही विचार उपयुक्त रहता है। इसको पिछले कर्मों से नहीं जोड़ना चाहिए।

182 शालीमार नगर
होशियारपुर (पंजाब)

☞ पृष्ठ 02 का शेष

बोध कथाएँ...

प्रजापति ने कहा– "अच्छी बात है, परन्तु मैं उपदेश दूँगा उस अवस्था में जब तुम 30 वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचर्य धारण करके मेरे पास आओ।"

"30 वर्ष तक देवता, असुर और मनुष्य ब्रह्मचर्य का पालन करते रहे। 30 वर्ष के पश्चात् फिर प्रजापति के पास आए। प्रजापति ने पूछा– "क्यों भाई, मेरी आज्ञा का पालन हुआ?"

वे बोले–"जी महाराज!"

प्रजापति ने कहा–"अच्छी बात है। आगे बढ़ों और सुनो मेरा उपदेश।"

सबसे पहले देवता आगे बढ़े। प्रजापति ने ऊँची आवाज में कहा–"द" और मौन हो गए।

अब देवता खड़े हैं। देख रहे हैं। उनकी ओर कुछ भी बोले नहीं।

प्रजापति ने पूछा– "क्यों भाई देवताओं! तुमने मेरे उपदेश का अर्थ समझा?"

देवताओं ने कहा–"जी महाराज! आपने 'द' अर्थात् दमन करो। आपने हमें दमन करने, इन्द्रियों को वश में रखने का आदेश दिया है।"

प्रजापति बोले–"ठीक समझे हो तुम। यही तुम्हें करना है। यही करने से तुम्हारा कल्याण होगा।"

तब मनुष्य आगे बढ़े। प्रजापति ने उनकी ओर देखते हुए कहा– "द" और चुप हो गए।

मनुष्यों ने कहा– "धन्य हो प्रजापति! आपका उपदेश बहुत उत्तम है।"

प्रजापति ने पूछा– "क्या है मेरा उपदेश?"

मनुष्यों ने कहा–"आपका उपदेश है– 'द' अर्थात् दान। आपने हमें दान करने का उपदेश दिया है।"

प्रजापति बोले–"ठीक समझे हो तुम। जाओ, दान देने में ही मनुष्य का कल्याण है। अब दूसरों को आगे आने दो"

असुर आगे बढ़े तो प्रजापति ने पुनः कहा–"द" और चुप हो गए। असुर हाथ जोड़कर खड़े रहे। प्रजापति ने पूछा–"क्यों भाई! मेरे उपदेश का अर्थ तुमने समझा?"

असुरों ने कहा– "जी महाराज! आपने हमें 'द' अर्थात् दया का उपदेश दिया है। आपने कहा कि प्राणिमात्र पर दया करें।"

प्रजापति बोले–"ठीक समझे हो तुम। यही है मेरा उपदेश तुम्हारे लिए।"

इस प्रकार एक ही "द" अक्षर से प्रजापति ने देवताओ, मनुष्यों और असुरों तीनों को उपदेश दिया। देवताओं के लिए दमन, मनुष्यों के लिए दान और असुरों के लिए दया। एक ही अक्षर का तीनों के लिए भिन्न–भिन्न अर्थ हो गया।

देवता उस समय देवता बना है, जब वह अपनी इन्द्रियों का दमन करे, उन्हें वश में रखे, अन्यथा उसका देवत्व समाप्त हो जाता है। मनुष्य उस समय मनुष्य बनता है, जब तक वह स्वयं दया कर दूसरों को दान दे, दूसरों की रक्षा करें, दूसरों की सहायता करे, नहीं तो उसकी मानवता पशुता में बदल जाएगी और असुर सही अर्थों में उस समय असुर है जब वह अपनी शक्ति को दूसरों पर दया करने के लिए, उन्हें संकटों से बचाने के लिए और उन्हें आपत्ति में सहायता देने के लिए प्रयोग करे, नहीं तो वह असुर नहीं, राक्षस बन जाएगा।

–क्रमशः

आर्यसमाज में प्रवेश

● स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती

ऊपर लिखा जा चुका है कि पहले–पहल वैराग्य की लहर दृढ़ संकल्पी लेखराम के हृदय में एक नवीन वेदान्ती सिक्ख सिपाही के सत्संग से उठी थी। उसी लहर ने मन रूपी समुद्र के जल तरंग को विविध रूपों में बदल कर लेखराम को कहीं रासलीला के भँवर में घुमाया और कहीं गृहस्थाश्रम के कर्त्तव्यों से घृणा दिलाई। किन्तु लेखराम की बुद्धि एक जाग्रत शक्ति थी, उसकी दृष्टि में यह भ्रम ठहर नहीं सकता था कि जीवात्मा ही ब्रह्म है और इसलिए वह कभी भी अपने उस समय के धार्मिक विचारों से सन्तुष्ट नहीं हो सकता था। इस समय की दो घटनाएँ लेखराम के उस स्वभाव को जो उसे पैतृक दाय में मिला था, बहुत स्पष्ट करती हैं, इसलिए उनका वर्णन लाभदायक होगा।

पेशावर में नौकरी के दिनों में अकेले होने के कारण आटा लेकर रोटी बनवाने तन्दूर वाले की दुकान पर जाया करते थे। एक दिन शहर में किसी आदमी को एक बैल या गाय ने सींगों से घायल किया जिसकी चर्चा सारे बाज़ार में फैल गई। तन्दूर वाले की दुकान पर भी यही चर्चा थी। पण्डित लेखराम तत्काल ही बोल उठे, "क्यों न गाय के सींग पकड़ लिए? और नहीं तो लाठी मार कर हटा देना चाहिए था।" लोगों ने कहा, "महाराज, गोमाता पर कैसे हाथ उठाता?" इस पर अक्खड़ लेखराम के होंठ फड़कने लगे, आँखें लाल हो गईं और अधिक अटक–अटक कर बोले, "अगर मेरे सामने गाय या बैल आए और मुझे मारने लगे और जान का खतरा हो तो मैं तलवार से उसका सिर उड़ा दूँ।" इतना कहना था कि लोगों ने "दुष्ट! हत्यारा?" इत्यादि दुर्वचनों का तूफान मचा दिया और तन्दूर वाले ने लोगों के जोश से डर कर आटा ज्यों का त्यों लौटा दिया।

एक ओर तो रुकावट सामने आने पर इतना अक्खड़पन और दूसरी ओर एक और घटना सुनाता हूँ जिससे पता लगता है कि धर्म की जिज्ञासा ने उस तंग जमाने में भी लेखराम को उदार सार्वभौम हृदय का स्वामी बना दिया था। पेशावर से एक महाशय लिखते हैं कि पण्डित लेखराम के मित्र महता कृपाराम जी ने उन्हें महम्मदी मत की पुस्तकों का अधिकतर पाठ करते देखकर एक दिन पूछा कि आप मुसलमानी मज़हब की पुस्तकों को इतना क्यों पढ़ते हैं, यदि महम्मदी मत आपको सच्चा लगे तो क्या आप मुसलमान हो जाएँगे।" वहाँ उत्तर के लिए कुछ सोचने की आवश्यकता न थी, उत्तर मिला–बेशक? अगर दस घड़े रखे हों और यह मालूम न हो कि ठण्डा पानी किस में है तो जब तक थोड़ा–थोड़ा पानी सबमें से न पिया जाए तब तक कैसे पता लग सकता है कि किस घड़े का पानी ठण्डा और मीठा है। इसी तरह सब मतों की पुस्तकों की पड़ताल करके पता लगाना चाहिए कि सच्चा धर्म कौन सा है।"

इन दो उक्तियों से ही पण्डित लेखराम के स्वभाव के उतराव–चढ़ाव का कुछ पता लग जाता है।

इन्हीं दिनों जब वे गीता की सटीक पुस्तक काशी से मंगाकर उसे व्याख्या सहित पढ़ रहे थे तब उन्हें मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी की पुस्तकों को देखने की उत्कण्ठा हुई। तत्काल ही धर्म के प्यासे ने अलखधारी के सब प्रसिद्ध ग्रन्थों सहित, उनको भेंट कर दिए। पेशावर आर्यसमाज के पुस्तकालय की सूची भी पण्डित लेखराम की ही लिखी हुई है, जिसमें ऋषि दयानन्द से मिली हुई अष्टाध्यायी के साथ–साथ 'तोहफ़तुल इस्लाम' और 'पादाशुल–इसलाम' इत्यादि के नाम भी दर्ज हैं।

पंजाब में मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी के लेखों ने वैदिकधर्म को पुनर्जीवित करने में वही काम दिया जो ईसाई मत की स्थापना से पहले 'यहुन्ना' (John the Baptist) के व्याख्यानों ने किया था। यदि कृश्चियन चर्च को ईसा का उपदेश समझाने के लिए यहुन्ना के व्याख्यानों की आवश्यकता थी तो आर्यसमाज को भी ऋषि दयानन्द का उद्देश्य समझाने के लिए अलखधारी की प्रचण्ड चोटों की जरुरत अवश्य थी। उस समय के नवशिक्षित पंजाबी और कुछ कुछ संयुक्तप्रान्ती भी, अलखधारी को अपना 'पैगम्बर' और 'राहबर' मानते थे। अलखधारी के खुले स्पष्ट शब्द कुरीतियों से पीड़ित आर्य सन्तान को उत्साहित करने और उन्हें अन्ध परम्परा की कड़ी साँकलों को तोड़ने का बल प्रदान करने में बिजली का काम देते थे। किन्तु फिर भी पुराने ढर्रे के पौराणिकों पर उनका कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता था। पौराणिक गढ़ को तोड़ने के लिए वेदशास्त्र रूपी प्रबल शास्त्रों की आवश्कता थी, जिनके चलाने में निपुण एक ही कौपीनधारी सन्यासी शताब्दियों के पश्चात् दिखाई दिया था। अलखधारी ने उसी अखण्ड शस्त्रधारी बाल ब्रह्मचारी की शरण ली, और अपने लेखों की पुष्टि में स्वामी दयानन्द सरस्वती के व्याख्यानों और लेखों का प्रमाण दिया। यही कारण था कि मुंशी कन्हैयालाल अलखधारी के सब चेले अन्त में ऋषि दयानन्द की पवित्र शरण में आए और आर्यसमाज के उत्साही सभासद बने। इसी प्रकार के सुशिक्षित युवक वीरों में से लेखराम भी एक था।

अलखधारी की पुस्तकों को पढ़ने से ही लेखराम को ऋषि दयानन्द के नाम और काम का पता लगा। तब उन्होंने अपने माने हुए अद्वैत मत की पड़ताल की और जब तक पूरी छान–बीन करके अपने आपको परमात्मा का सेवक, पुत्र, भक्त न समझ लिया तब तक दम न लिया। इन्हीं दिनों समाचार पत्रों में ऋषि दयानन्द के धर्म प्रचार के काम की धूम मची हुई थी। लेखराम ने पत्र–व्यवहार आरम्भ करके ऋषि–प्रणीत ग्रन्थों को मँगाया और सम्वत् 1937 के अन्तिम भाग में ही पेशावर में आर्यसमाज स्थापित कर दिया।

आर्यसमाज की स्थापना तो हुई किन्तु उसकी सीमा लेखराम से बाहर न थी। जिनको मृत्यु के समय धर्म की मूर्ति माना गया और जिनके नाम के साथ लगकर पण्डित शब्द अपने आपको स्वयं सम्मानित समझता था, उन्हें उस समय 'लेखू' कहकर पुकारा जाता था। लोकोक्ति प्रसिद्ध है "माया तेरे तीन नाम। परसू, परसा, परसराम।" इसी प्रकार कहा जा सकता है कि आत्मसमर्पण करने वाले लेखराम भी लेखू से लेखराम और फिर 'धर्मवीर पण्डित लेखराम' बन गए। लेखू महाशय उस समय पेशावर नगर में 'भाई रंजी की धर्मशाला' के अन्दर रहते थे। उसी स्थान पर आर्यसमाज के साप्ताहिक नहीं प्रत्युत दैनिक अधिवेशन होने लगे। न कोई नोटिस लगाया जाता और न ढिंढोरा पिटवाया जाता; वैदिक धर्म का सिपाही लेखू अपने तीन–चार मित्रों को समझाने बैठता। पाँच में चार मित्रों को तो समझा लिया और वे 'खुद खुदा' कहलाने से लज्जित होकर परमपिता की शरण में आ गए किन्तु पाँचवाँ कट्टर नवीन वेदान्ती था जिसने लेखू को भी अद्वैत का पहला पाठ पढ़ाया था। जब वह किसी प्रकार भी काबू न आया तो लेखू से 'लेखराम' बने हुए मित्र ने कहा, "कमबख्त! तेरी समझ में कुछ नहीं आता तब भी हमारी खातिर से ही आर्य बन जा। मित्र मण्डल तो न टूटेगा।" यह युक्ति प्रबल थी, काम कर गई। पाँचों ने मिलकर काम करना आरम्भ किया। कहते हैं कि 'एक और एक ग्यारह' होते हैं। यहाँ तो–'पाँच–पंच मिल कीजे काज। हारे जीते न आवै लाज' वाला मामला हो गया।

धर्म जिज्ञासु लेखराम ने आर्यसमाज तो स्थापित कर लिया और नियमपूर्वक नित्यकर्मों का पालन भी आरम्भ कर दिया किन्तु दूसरों को समझाने में कभी–कभी स्वयं डाँवाडोल हो जाते। अन्य सर्व सिद्धान्तों का तो बड़ी प्रबल युक्तियों से खण्डन करते किन्तु जब अपने नवीन वेदान्ती मित्रों से बातचीत होती तो कभी–कभी निरुत्तर हो जाते। फिर थे भी तो अभी तक सुन्नी आर्य! एक लोकोक्ति है कि मुसलमानी मत सब रास्ते साफ करता और तलवार के ज़ोर से लोगों को मुहम्मदा बनाता–बनाता जब अटक नदी के किनारे पहुँचा तब गुरु नानक ने कहा–'अब तो अटक।' गुरु महाराज के इस आदेशानुसार असली मुसलमानी मत अटक के उस पार ही रह गया; तब मुल्लाओं ने अपनी बाँग देनी शुरु की जिसको सुनकर अटक के इस पारवाले हिन्दू भी मुसलमान होने लगे। इसीलिए हिन्दुस्तान के मुसलमान सुन्नी कहलाते हैं।

उपरोक्त लोकोक्ति के अनुसार लेखराम भी अब तक सुन्नी आर्य ही थे। उन्होंने मन में ठान लिया कि आर्यसमाज के प्रवर्त्तक ऋषि दयानन्द से संशय निवृत्ति करने, और उनसे आशीर्वाद लेने के लिए उनकी सेवा में अवश्य जाना चाहिए। ऐसा दृढ़ निश्चय करते ही साढ़े चार वर्षों की नौकरी के पश्चात् एक शाम की पहली छुट्टी (5 मई सन् 1880 ई.से) लेकर 11 मई को ऋषि दयानन्द के दर्शनार्थ अजमेर नगर की ओर चल दिए। लाहौर, अमृतसर, मेरठ आदि नगरों के प्रसिद्ध आर्यसमाजों में ठहरते हुए 16 मई की रात को अजमेर जा पहुँचे और 17 मई को सेठ फतेहमल जी की वाटिका में पहुँच कर ऋषि दयानन्द के प्रथम और अन्तिम बार दर्शन किए। इस समागम का हाल आर्य–पथिक ने अपने शब्दों में इस प्रकार दिया है–

"स्वामी दयानन्द के दर्शन से यात्रा के सब कष्ट विस्मृत हो गए और उनके सत्य उपदेशों से सर्व संशय निवृत्त हो गए। जयपुर में मुझसे एक बंगाली ने प्रश्न किया था कि आकाश भी व्यापक है और ब्रह्म भी व्यापक है, दो व्यापक किस प्रकार एक स्थान में इकट्ठे रह सकते हैं। मुझसे इसका कुछ उत्तर बन न आया। मैंने यही प्रश्न स्वामी जी से पूछा। उन्होंने एक

शेष पृष्ठ 09 पर ☞

वर्षा जलभण्डारण एवं पुनर्भूजलभरण

● पं. वेदप्रकाश शास्त्री

वर्षा का जल भण्डारण एवं पुनर्भूजलभरण हेतु आवश्यकता इस बात की है कि इसके शुभारंभ हेतु उच्च स्तरीय वर्ग से मध्यम और फिर निम्नस्तरीय वर्गोन्मुख सूत्र को अपनाया जाए। इस सूत्र के अन्तर्गत अग्रलिखित उच्चतम, उच्चतर एवं उच्चस्तरीय वर्ग आ जाता है।

राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति, प्रधानमंत्री सहित लोकसभा, राज्य सभा के सभी मंत्री, पक्ष–विपक्ष के सभी सांसद, सभी मंत्रालयों के अधिकारी–कर्मचारी, सभी प्रान्तीय राज्यपाल, मुख्यमंत्री, विधान सभा–विधान परिषदों के विधायक, सचिवालयों के अधिकारी–कर्मचारी, न्यायपालिका के न्यायाधीश–अधिवक्ता, उच्चस्तरीय उद्योगपति, शासकीय–प्रशासकीय अधिकारी वर्ग, किसी भी सरकारी–गैर सरकारी विभाग के अधिकारी उच्च कम्पनियों में कार्यरत सरकारी/गैर सरकारी/ व्यक्तिगत आवासों में वर्षाजल भण्डारण एवं आवश्यकतानुसार पुनर्भूजलभरण योजना को लगाना अतिशय अनिवार्यतम कर १५या जाए। निश्चित की गई अवधि तक कार्यपूर्ण न होने पर दण्ड का भी प्रावधान किया जाए। वह भी अपने उच्च–उच्चतर–उच्चतम पद के अनुसार हो, क्योंकि जो जितने उच्च पद पर हैं, वह कर्त्तव्य–पालन के प्रति उतना ही अधिक उत्तरदायी है। एक बात और, यही लोग सर्वाधिक जल का उपयोग/दुरुपयोग करते हैं।

जहाँ तक दण्ड का प्रश्न है। इस सम्बन्ध में महर्षि दयानन्द कहते हैं– "जिस अपराध में साधारण पर एक पैसा दण्ड हो, उसी अपराध में राजा पर सहस्र पैसा दण्ड अर्थात् साधारण मनुष्य से राजा पर सहस्र गुणा दण्ड होना चाहिए। दीवान अर्थात् राजा के मंत्री को आठ सौ गुणा, उससे न्यून को सात गुणा..... दण्ड होना चाहिए, क्योंकि प्रजा पुरुषों से राजपुरुषों को अधिक दण्ड न देवे तो राजपुरुष प्रजापुरुषों का नाश कर देवें। जैसे सिंह अधिक और बकरी थोड़े से ही दण्ड से वश में आ जाती है। इसलिए राजा से लेकर छोटे से छोटे भृत्य तक राजपुरुषों को अपराध में प्रजा से अधिक दण्ड होना चाहिए, "सत्यार्थ प्रकाश समु.6

दूसरी बात, उपर्युक्त वर्णित व्यक्तियों में से अधिकांशतः लोग सरकारी/अर्द्धसरकारी/उच्च कम्पनियों द्वारा प्रदत्त आवासों में रहते हैं। अतः खर्च भी उनको ही करना होगा, जिससे आवास प्राप्त व्यक्तियों पर इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ना है। अतः आवास प्रदान करने वाली संस्थाएँ/सरकारी जलभण्डारण/ पुनर्भूजलभरण योजना को सुनिश्चित बना कर लागू करें, जिससे अधिकांश वर्षाजल भण्डारित अथवा पुनर्भूजलभरित हो सके। ऐसा होने पर जल भण्डारण/ पुनर्भूजलभरण से जल स्तर स्वतः ही ऊपर आ जाएगा।

इसी प्रकार उच्चस्तरीय पब्लिक, मॉडल, कान्वेंट स्कूल, सभी कॉलेज, विश्वविद्यालय, संस्थान, सम्पन्न धार्मिक स्थल, आश्रम, औद्योगिक इकाइयों के लिए भी यह अनिवार्य होना चाहिए कि वे जलभण्डारण हेतु निर्धारित कदम उठाकर समय सीमा के अन्दर पूर्ण करें अन्यथा उचित कार्यवाही हेतु तैयार रहें।

यदि यह नियम लागू हो जाए तो भारत का अनुमानतः 30 प्रतिशत से भी अधिक उच्चस्तरीय वर्ग इसके अन्तर्गत आ जाएगा। जो समस्या के समाधान में पूर्णतः सहायक सिद्ध होगा।

अभयारण्य, वन्यक्षेत्र, बंजर भूमि, रेगिस्तान सदृश स्थानों/क्षेत्रों में स्थिति के अनुसार जलभण्डारण हेतु विशाल जलाशयों का निर्माण कर वर्षा जल का भंडारण किया जा सकता है। जहाँ अधिक बाढ़ आती है वहाँ से बरसाती नहरों द्वारा जोड़ कर जलाशयों को भरा जाए। वर्षा काल में भाखड़ा नंगल सदृश बाँध के सागर में अधिक पानी भर जाता है। उसे पुनः नदी में न भेज कर निर्मित नहरों द्वारा समीपवर्ती बनाए गए जलाशयों को भर लिया जाए जो आवश्यकता पड़ने पर काम आए। कहीं अधिक वर्षा, बाढ़ और कहीं बिल्कुल सूखा से निपटने का यही सर्वोत्तम उपाय है।

अधिक बाढ़ वाले क्षेत्रों में निर्धारित विधि से पानी को नलकूपों द्वारा पुनः भूमि के अन्दर पहुँचाया जा सकता है। यदि जल दोहन हो सकता है तो पुनर्भूजल भरण क्यों नहीं? इसमें तो बिजली की भी आवश्यकता नहीं होगी। नदियों के किनारे परिस्थिति अनुसार नलकूप उसी प्रकार लगाएँ जाएँ जैसे छतों के पानी को भूमि के अन्दर जाने के लिए विधि अपनाई जाती है।

वस्तुतः यह कार्य सरकार का है जो योजनाबद्ध तरीके से अपनाया जाना चाहिए। इस विधि से निम्नस्तर पर पहुँचे जल पर नियन्त्रण पाया जा सकता है। इसके लिए पंचवर्षीय योजना बना कर कार्यान्वित किया जा सकता है।

जैसे छतों के वर्षा जल भण्डारण हेतु प्रेरित किया जाता है वैसे ही कृषक वर्ग को भी प्रेरित किय जाए कि वे वर्षा काल में अपने खेतों के पानी को व्यर्थ में न बह जाने दें। उन्हें चाहिए कि अपने खेतों के क्षेत्रफल के अनुसार मध्य में अथवा किनारे पर एक जलाशय अवश्य बनाएँ। जिसमें वर्षा का जल एकत्रित हो। आवश्यकतानुसार उससे सिंचाई करें अथवा पुनर्भूजलभरण किया जा सकता है। खेतों में डाली गई खाद भी जल में घुल कर जलाशय में एकत्रित होगी। अतः खेत के लिए वह जल अधिक अन्नोत्पादन में सहायक होगा।

ईंट भट्ठों के समीप का क्षेत्र ईंटों के लिए मिट्टी निकाल लेने से खाली हो जाता है। उसे भी जलाशय हेतु प्रयोग किया जा सकता है। पहाड़ी क्षेत्रों में तो वर्षा का तमाम पानी नीचे की ओर बहता है, उसे भी निचले स्थान पर जलाशय बना कर एकत्र किया जा सकता है। राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात जैसे राज्यों में अनेक ऐसे स्थान हैं जहाँ प्रतिवर्ष सूखा पड़ता है और वर्षा काल में बाढ़ आ जाती है। फिर ऐसे स्थानों पर जलाशय क्यों नहीं बनाए जाते? अथवा अनेक स्थानों पर पहले के ही बने तालाब, बावड़ी, कुओं का पुनरुद्धार क्यों नहीं किया जाता? जलाशयों के चारों ओर तो लोगों ने अवैध कब्जे कर लिए हैं। उन्हें हटा कर जलाशयों के आकार को पूर्ववत् किया जाए' जिससे उसमें अधिक मात्रा में जल एकत्रित हो सके। बावड़ियों और कुओं का पुनर्भूजलभरण हेतु भी प्रयोग किया जा सकता है।

परन्तु यह सरकार की कुव्यवस्था एवं उदासीनता का ही परिणाम है। **'का वर्षा जब कृषि सुखाने'** महात्मा तुलसी दास का यह कथन अक्षरशः सत्य है। जनता प्यासी मरने लगती है। जब मौके पर पानी न मिले, जान चली जाए। बाद में तर्पण करते रहें। बाद में आँसू पौंछने अथवा मगरमच्छी आँसू बहाने के लिए टैंकरों अथवा रेलगाडियों गाड़ियों से सप्ताह में दो चार दिन पानी भेजना भी इकट्ठी हुई भीड़ को मारामारी के लिए जन्म देता है, जितना बाल्टियों और घड़ों में पानी भरा जाता हैं, उससे कहीं अधिक नीचे बह जाता है कइयों को तो पानी मिलता ही नहीं। सूखे की चपेट में आकर चुनावी वायदे सूख जाते हैं अथवा बाढ़ में बह जाते हैं। जनता चातक की तरह स्वाति नक्षत्र की ओर टकटकी लगाए रहती है अगले पंचवर्षीय चुनावी वायदों की ओर।

शास्त्री भवन 4–ई कैलाश नगर
फाजिल्का, 152123 (पंजाब)
मो. 7463428299

☞ *पृष्ठ 08 का शेष*

आर्यसमाज में ....

पत्थर उठाकर कहा "इसमें अग्नि व्यापक है या नहीं?" मैंने कहा कि व्यापक है। फिर पूछा, "मिट्टी?" मैंने कहा कि व्यापक है। फिर पूछा, "परमात्मा?" मैंने कहा कि वह भी व्यापक है। तब कहा, "देखो! कितने पदार्थ हैं, परन्तु सब इसमें व्यापक हैं। असल बात यह है कि जो (वस्तु) जिससे सूक्ष्म होती है वही उसमें व्यापक हो सकती है। ब्रह्म यतः सबसे अति सूक्ष्म है अतः सर्वव्यापक है।" इससे मेरी शान्ति हो गई। मुझे उन्होंने आज्ञा दी कि जो संशय मुझे हों, उनका निवारण कर लूँ। मैंने बहुत सोच–समझकर दस प्रश्न लिखे जिनमें से तीन प्रश्न मुझे याद हैं, शेष सब भूल गए–

प्रश्न–जीव ब्रह्म की भिन्नता में कोई वेद का प्रमाण बतलाइए।

उत्तर–यजुर्वेद का चालीसवाँ अध्याय सारा जीव ब्रह्म का भेद बतलाता है।

प्रश्न–अन्य मतों के मनुष्यों को शुद्ध करना चाहिए या नहीं?

उत्तर–अवश्य शुद्ध करना चाहिए।

प्रश्न–बिजली क्या वस्तु है और कैसे उत्पन्न होती है?

उत्तर–विद्युत सर्व स्थानों में है और रगड़ से उत्पन्न होती है। बादलों की विद्युत भी बादलों और वायु की रगड़ से उत्पन्न होती है।

अन्त में मुझे आदेश दिया कि 25 वर्ष (की आयु) से पहले विवाह न करना।

ऋषि दयानन्द जी के थोड़े ही सत्संग ने लेखराम के धार्मिक विचारों को दृढ़ कर दिया और इसीलिए उसके पश्चात् हम वैदिक धर्म पर उनका विश्वास चट्टान की तरह दृढ़ पाते हैं।

धर्मवीर पण्डित लेखराम से साभार

पत्र/कविता

सफल होगा सबका एक हो जाना

बहुत समय हो गया हमें, अपने स्वार्थवश परस्पर लड़ते–लड़ते।
प्रसन्नता है, ईश्वर की अपार कृपा से, अब तो सभी आर्य नेता चेते।।
"खुशहाल" कहना चाहता, आर्य जगत् के सभी नेताओं को एक बात।
वह आर्य समाज की बिगड़ी हालत देख, रोता है दिन–रात।।
यदि आप चाहते हो करना आर्य समाज का कल्याण व भला।
तो फूट मिटा कर, एक हो जाओ, यही है मेरी नेक सलाह।।
जब तक नहीं होगा सच्चे आर्यों का एक महान् वैश्विक संगठन।
तब तक कितना ही कर लो, नहीं चलेगा अलग–अलग गठबन्धन।।
आखिर इसका एक ही ईलाज है, अच्छे आर्यों की एक सार्वदेशिक का बन जाना।
मुझे पूर्ण विश्वास है, सफल होगा हैदराबाद में सब नेताओं का एक हो जाना।।
ईश्वर नेताओं को सद्बुद्धि देवे, सीखें वे एक दूसरे को गले लगाना।
तभी महर्षि का स्वप्न साकार होगा और विश्व पुनः करने लगेगा हमारी सराहना।।

खुशहाल चन्द्र आर्य
180 महात्मा गांधी रोड, (दो तल्ला)
कोलकाता–700007
मो. 9830135794

कठोर नियमों को निर्ममतापूर्वक लागू करके होगी प्रकृति की रक्षा

आज विश्व–पर्यावरण दिवस है। आज़ का विश्व किसका बनाया हुआ है ? अमेरिका का, भौतिकवादी ओर उपभोगवादी अमेरिका का। वह भारत को क्या सिखाएगा, पर्यावरण की रक्षा उस भारत को, जिसमें बच्चों को सिखाया जाता है कि सूर्यास्त के बाद फूल मत तोड़ लेना, क्योंकि पौधे मनुष्यों की तरह सो जाते हैं। साल में एक दिन भारतीय महिलाएं पेड़ों की परिक्रमा करके उन्हें पूजती हैं। तुलसी के पौधे की तो रोज ही पूजा होती है। वृहदारण्यक उपनिषद् में ऋषि याज्ञवल्क्य वृक्षों की तुलना मनुष्य के शरीर से करते हैं। प्रकृति, आत्मा और परमात्मा– इन तीनों तत्वों के संबंधों पर हमारे वेद और दर्शन ग्रंथों की विस्तृत मीमांसा है। वृक्षों की रक्षा के लिए ही राजस्थान के खेजलडी नामक स्थान पर सन 1730 में 363 लोगों ने अपने सिर कटा दिए थे। ये सिर कटानेवाले लोग उस महान संत जम्भेश्वर महाराज के अनुयायी थे, जिन्होंने बिश्नोई संप्रदाय की स्थापना की थी। इस तर्ज पर 30–40 साल पहले उत्तराखंड में 'चिपको' आंदोलन चला था। क्या इस तरह का कोई बलिदान या आंदोलन उन देशों में चला है, जो दुनिया में सबसे अधिक प्रदूषण फैलाने के लिए जिम्मेदार हैं ? इन राष्ट्रों ने हमें सिर्फ पेड़–पौधों से दुश्मनी करना ही नहीं सिखाया है, उन्होंने प्लास्टिक, पेट्रोल, कोयले के धुंए और डिब्बाबंद जीवन का ऐसा मायाजाल फैलाया है कि अब से तीस–चालीस साल बाद इस दुनिया के करोड़ों लोग शुद्ध पानी पीने और सांस लेने को तरस जाएंगे।

सभी दुनिया के लोग हर साल 13 लाख टन प्लास्टिक का इस्तेमाल करके उसे समुद्रों के हवाले कर देते हैं। हर मिनिट 10 लाख प्लास्टिक की बोतलें फेंकी जाती हैं। प्लास्टिक की थैलियां निगल जाने के कारण लाखों पशु, पक्षी और समुद्री जीव मौत के घाट उतर जाते हैं। भारत में 15 लाख टन कचरा रोज पैदा होता है। पिछले 100 वर्ष में भारत में इतनी बेरहमी से पेड़ काटे गए हैं कि अब जंगल सिर्फ 21.34 प्रतिशत ही रह गए हैं।

प्रकृति के इस विनाश का मुकाबला कठोर कानून बनाने और उन्हें निर्ममतापूर्वक लागू करने से होगा। पेड़ों को गिरानेवालों, प्लास्टिक की थैलियों को बनाने, बेचने और इस्तेमाल करनेवालों को कड़ी सजा दी जाए। लोगों को प्रेरित किया जाए कि वे प्लास्टिक की वस्तुओं का कम से कम उपयोग करें। राजनीतिक दल और समाजसेवी संस्थाएं आंदोलन चलाएं और आम लोगों से संकल्प करवाएं। यदि हर व्यक्ति कम से कम 10 पेड़–पौधे लगाने का संकल्प ले ले तो भारत में 1300 करोड़ नए पौधे और पेड़ लहराने लगेंगे। हमारे वैज्ञानिकों को अनुसंधान करके ऐसे उपाय खोज निकालने चाहिए, जिनसे जो प्लास्टिक 1000 साल तक नष्ट नहीं होता, उसे तुरंत खत्म किया जा सके। देश की समस्त राज्य सरकारें लोगों को मुफ्त पौधे दें, बीज दें, खाद दें, सिंचाई की व्यवस्था करें। शाकाहार को बढ़ावा दें। प्रकृति को नागरिकों के रोजमर्रा के जीवन से घनिष्ठतापूर्वक जोड़ें।

वेद प्रताप वैदिक
ई–मेल : dr.vadik@gmail.com

सिक्किम में भी डी.ए.वी.- अद्भुत है

महात्मा हंसराज की परिशिष्ट प्राप्त हुआ। आभार परिशिष्ट से प्राप्त जानकारी के अनुसार सिक्किम प्रदेश में भी डी.ए.वी. की शाखा कार्यरत है। यह आश्चर्यजनक है और अद्भुत है।

माननीय पदम् श्री पूनम सूरी जी को बधाई। सम्पूर्ण देश में डी.ए.वी. स्कूलों की आठ सौ से ज्यादा संस्थायें संचालित हैं यह जानकर हर्ष हुआ। उम्मीद की जा सकती है कि माननीय सूरी जी के संस्कारों के अनुरूप इन संस्थाओं से आर्य समाज के प्रचार–प्रसार का नया आधार मिलेगा।

कृष्ण मोहन गोयल
113– बाजार कोटा
अमरोहा–244221

****

भारत सरकार उचित कार्यवाही करे

तीन बच्चों की विधवा माँ, अप्रैल में, जत्थे के साथ, पंजाब से पाकिस्तान, बैशाखी मनाने गई थी वहाँ किसी मुस्लिम युवक ने उससे मोबाइल पर वार्ता कर ली। बातों में उसका युवक से प्रेम हो गया और उसने धर्म बदलकर उस युवक से निकाह कर लिया। क्या निकाह सफल रहेगा?

सिख धर्मी महिला ने झूठ बोला कि बच्चे उसके नहीं हैं उसकी मौसी के हैं। पाकिस्तान की नागरिक बनने के लिए उच्च न्यायालय में उसी ने प्रार्थनापत्र दाखिल कर दिया है। बच्चे अपने दादा के साथ रह रहे हैं। दादा ने भारत सरकार को वास्तविकता से सूचित कर दिया है।

लव, जिहादी, युवतियों को फँसाने में प्रायः सफल हो जाते हैं। ऐसे निकाह असफल ही देखे गए हैं। यह भी हो सकता है कि भेंट वार्ता में युवक ने कुछ सुंघा दिया हो या कोई पदार्थ कोल्ड ड्रिंक में मिलाकर पिला दिया हो जिससे उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई और उसने सिख धर्म छोड़कर मुस्लिम धर्म स्वीकार करके शादी भी कर ली और बच्चों को भूल गई।

यह जांच का विषय है। भारत सरकार से अनुरोध है कि वह उचित कार्यवाही करे।

इन्द्रदेव
18/186 टीचर्स कालोनी
बुलन्दशहर–203001

****

सोम से हम स्वस्थ हो छोटे प्रभु बनते हैं

● डॉ. अशोक आर्य

सम्पूर्ण जीवन वेदवाणी के विचार का विषय है तथा वह कर्म व पुरुषार्थ प्रधान है। हमें ज्ञान देती है। सोम से हम छोटे प्रभु का रूप लेते हैं, उन्नति करते हुए, हव्य की रक्षा करते हुए हम अपने जीवन को यज्ञमय बनावें। इसकी चर्चा इस मन्त्र में इस प्रकार की गई है:–

सा विश्वायु: सा विश्वकर्मा सा विश्वधाया:। इन्द्रस्य त्वा भागंउसोमेनातनच्मि विश्णो ह्व्यंउरक्श।। यजुर्वेद 1.4।।

इस मंत्र में चार बातों पर उपदेश करते हुए बताया गया है कि :–

1. **वेदवाणी सम्पूर्ण जीवन का वर्णन करती है:** विगत मन्त्र में वेदवाणी के दोहन पर विस्तार से वर्णन किया गया है, यह वेदवाणी हमारे सम्पूर्ण जीवन का वर्णन करने वाली है। इससे स्पष्ट है कि मानव जीवन के आदि से अन्त तक के जीवन के सम्बन्ध में वेद में चर्चा आती है। वेद में जीवन के विभिन्न अवसरों पर मानव के करणीय कार्यों व कर्तव्यों की बड़े विस्तार से चर्चा की है तथा उपदेश दिया है कि हे मानव! यह वेद मार्ग ही तेरे सुख का मार्ग है, तेरे धन ऐश्वर्य की प्राप्ति का साधन है, तेरे लिए श्रेय प्राप्ति का साधन है। इसलिए तू सदा वेद के अनुसार ही अपने जीवन को चला। जब कभी तू वेद मार्ग से भटकेगा, तभी तेरे लिए विनाश का मार्ग खुल जाएगा, अवनति के गड्ढे में गिरता चला जाएगा। इसलिए वेदवाणी की शरण में ही रहना, इसके आँचल को कभी अपने से हटने मत देना।

वेद में ब्राह्मण आदि वर्णों तथा ब्रह्मचर्य आदि आश्रमों के लिए क्या करणीय है तथा उनके क्या क्या कर्तव्य हैं, सामाजिक स्थितियों में पति–पत्नी, बहिन–भाई, पिता–पुत्र, शिष्य–आचार्य, राजा–प्रजा, ग्राहक–दुकानदार आदि के कार्यों, कर्तव्यों, करणीय कार्यों आदि की बड़े ही विस्तार से चर्चा की गई है। समाज के प्रत्येक व्यक्ति, प्रत्येक वर्ग के लिए बड़ा ही सुन्दर उपदेश करते हुए, उनके कर्तव्यों पर विषद प्रकाश डाला है। इस प्रकार वेद ही समाज के प्रत्येक प्राणी का मार्ग–दर्शक है। इस पर चलने पर ही कल्याण का मार्ग खुलता है।

2. **वेदवाणी सब के कार्यां का वर्णन करती है:** समाज में अनेक खण्ड हैं, समाज के कार्यों का विभाजन करते हुए, प्रत्येक आश्रम, प्रत्येक वर्ण के कार्यों व कर्तव्यों पर भी इस वेदवाणी में चर्चा की गयी है। वेदवाणी का उपदेश है कि अपने कर्तव्यों को अवश्यम्भावी समझते हुए उसे तत्काल करना आरम्भ कर दो तथा तब तक उन पर कार्य करते रहो, जब तक सम्पन्न न हो जाएँ किन्तु अधिकारों की माँग कभी भी मत करें। जब तक प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्यों को सम्पन्न करने के लिए पुरुषार्थ नहीं करता, तब तक समाज ऊपर नहीं उठ सकता, उन्नति नहीं कर सकता। अतः समाज की उन्नति के लिए ही नहीं, अपनी स्वयं की उन्नति के लिए भी पुरुषार्थ द्वारा अपने कर्तव्यों की इति श्री आवश्यक है। इससे ही जीवन सुन्दर बनता है। इसके साथ ही हम कभी अपने अधिकारों की चर्चा तक न करें। जब हम अधिकारों को माँगने लगेंगे तो समाज का ताना बाना ही बिगड़ जाएगा। यह सत्य है कि जब हम अपने कर्तव्यों को सम्पन्न करने में लगते हैं तो यह अधिकार स्वयमेव ही प्राप्त होते जाते हैं। इन पर अलग से कार्य करने की आवश्यकता ही नहीं होती। तब ही तो गीता में भी उपदेश किया गया है कि "तुम्हारा अधिकार कर्म का ही है फल का नहीं।" **कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।।**

3. **वेदवाणी समग्र ज्ञान का पान कराती है:** वेद सब प्रकार का ज्ञान देते हैं, यह सब प्रकार के ज्ञानों का पान कराते हैं। ऐसा कोई ज्ञान नहीं है, जिसका वर्णन इस वेदवाणी में न हो। वेदवाणी द्वारा दिए इस ज्ञान से ही हमारी कर्तव्य भावना का उदय होता है, जागरण होता है। इस ज्ञान को दूध मानते हुए, इस समग्र ज्ञान के दूध का हमें यह वेदवाणी हमें पान कराती है। वेदवाणी में सब सत्य विद्याओं का ज्ञान प्रकाशित किया गया है। इस कारण यह प्राणी मात्र को व्यापक ज्ञान देती है। अनेक विद्वानों ने वेदवाणी को गौ के नाम से तथा इसके उपदेश को गाय के दूध से नाम से सम्बोधित किया है क्योंकि यह मानव के जीवन को श्रेष्ठ व उत्तम बनाने वाले गाय के दूध के ही समान जगत् के सब प्राणियों को धारण करती है तथा इन सब का पालन भी करती है।

इस वेदवाणी की चर्चा के साथ ही परम पिता परमात्मा कहते हैं कि हे जीव इस वेदवाणी का स्वाध्याय करने के कारण मैं तुझे छोटे रुप में तैयार कर देता हूँ, तुझे अपने छोटे रूप में बना देता हूँ, ताकि तू भी मेरे ही समान अपने से छोटे, अपने से अज्ञानी लोगों में इस वेदवाणी के ज्ञान को बाँट सके। इस प्रकार मैं तुझे ठीक कर देता हूँ, ठीक बना देता हूँ।

मानव जीवन में जो कुछ भी खाता है, अब आहार का अन्तिम रस अथवा रस सार रूप हमारा यह वीर्य होता है। इस वीर्य के द्वारा ही हमारे यह पिता हमारे शरीर को स्वस्थ बनाते हैं। इस सोम रक्षा से जहाँ हमारा स्वास्थ्य उत्तम बनता है, वहाँ हमारे मन से सब प्रकार के विकार, सब प्रकार के दोष धुल जाने के कारण इसमें ईर्ष्या, द्वेष आदि को स्थान ही [illegible]लता। सोम की रक्षा करने से हमारे शरीर में इतनी शक्ति आ जाती है कि इसमें किसी प्रकार की ईर्ष्या, किसी प्रकार का राग, किसी प्रकार का द्वेष स्थान नहीं पा सकता। इस प्रकार हम अपना समय राग–द्वेष में न लगा कर निर्माण के कार्यों में लगाते हैं। इससे हमें अत्यधिक धन–ऐश्वर्य की प्राप्ति होती है। हम सोम रुप हो जाते हैं। सोम रूप होने से हममें ज्ञान की अग्नि भड़क उठती है। ज्ञान प्राप्त करने की अद्भुत इच्छा शक्ति पैदा होती है। इस ज्ञानाग्नि रूपी ईंधन को पाकर हमारी यह अग्नि, यह इच्छा शक्ति और भी तीव्र हो जाती है तथा इससे हमारा मस्तिष्क तीव्र हो जाता है; दीप्त हो जाता है। इसमें ज्ञान का अत्यधिक प्रकाश हो जाता है, जिस प्रकार का तेज हमारे आभा–मण्डल को भी दमका देता है, चमका देता है। इस सोम से मानव का जहाँ मस्तिष्क दीप्त होता है वहाँ शरीर व मन आदि सब कुछ ही ठीक हो जाता है, पुष्ट हो जाता है।

4. **मानव विष्णु बन जाता है:** मानव जब सब प्रकार की उन्नति करने वाला बन जाता है तो इस प्रकार की उन्नति को त्रिविध उन्नति कहते हैं तथा इस प्रकार की उन्नति करने में सफलता पाने वाले मानव को त्रिविक्रम कहते हैं। इस त्रिविक्रम प्राणी को विष्णु भी कहा जाता है। इस प्रकार तीनों विधियों से उन्नत होने के कारण यह विष्णु बन जाता है। जो विष्णु बन जाता है, उससे परम पिता उपदेश करते हुए कहते हैं कि हे सब प्रकार से व्यापक उन्नति करने वाले प्राणी! तुम अपने जीवन से, अपने श्वासों से, अपने कर्मों से इस यज्ञ की सदा रक्षा करना अर्थात् सदा यज्ञ आदि कर्म करते रहना तथा अपने जीवन को यज्ञमय ही बना देना। यज्ञ को अपने जीवन से कभी अलग मत होने देना, विलुप्त मत होने देना। तेरे यह प्रभु यज्ञ रूप ही है। इस प्रकार जीवन पर्यन्त यज्ञ करने से ही तू वास्तव में इस यज्ञरूप प्रभु की निकटता पा सकेगा, उस प्रभु के समीप अपना आसन लगा सकेगा, उसकी उपासना कर सकेगा।

पाकेट–I प्लाट–61 प्रथम तल रामप्रस्थ ग्रीन, वैशाली–201010 जिला गाज़ियाबाद (उ.प्र.)
चलवार्ता : 09718528068

आर्य कन्या संस्कार निर्माण एवं आत्मरक्षा प्रशिक्षण सम्पन्न

छह दिवसीय आर्य कन्या संस्कार निर्माण शिविर, मुहाना मंडी रोड, सैनी नर्सिंग कॉलेज, जयपुर में भव्य समारोह के साथ सम्पन्न हुआ।

प्रशिक्षण शिविर का आरंभ ध्वजारोहण से हुआ। उद्घाटन सत्र के विशिष्ट अतिथि, शिक्षाविद् श्री आर.सी. शर्मा, डायरेक्टर, रिया–इंटरनेशनल थे। प्रशिक्षण का आरंभ, 'बेटी बचाओ अभियान' के लिए सम्मानित बहन पूनम आर्या तथा संयोजन बहन प्रवेश आर्या द्वारा हुआ। शिविरार्थिनायों को आत्म रक्षार्थ लाठी–प्रचालन का अभ्यास तथा कराटे की विधियाँ समझाई गईं। बौद्धिक विकास एवं आत्मबल जगाने

हेतु सन्ध्या–उपासना का महत्व साभ्यास समझाया गया।

समापन सत्र को संबोधित करते हुए मुख्य अतिथि जस्टिस प्रशान्त अग्रवाल ने कहा कि देश में घटित घृणित–घटनाएँ निंदनीय, दुर्भाग्यपूर्ण हैं और अशोभनीय भी। बेटियों को अपरिचितों की अपेक्षा खतरा परिचितों से होता है। ऐसी अनायास परिस्थितियों से निपटने में आत्मरक्षार्थ प्रशिक्षण ही उपाय है।

प्रशिक्षण शिविर के कुशल–संचालन में संयोजक श्रीमती सुधा मित्तल, समन्वयक डॉ. प्रमोद पाल, स्वागताध्यक्ष डॉ. सुमित्रा आर्या एवं श्री सुनील अरोड़ा व श्री सतीश मित्त की महती भूमिका रहीं। प्रभावी मंच संचालक यशपाल यश द्वारा हुआ। शान्ति पाठ के पश्चात् ऋषि लंगर के साथ समारोह का विसर्जन हुआ।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103\2018-20
Posted at N.D.P.S.O. ON 20\21-06-2018

ओ.एस. डी.ए.वी. कैथल में पाँच दिवसीय आर्य युवा वैदिक चेतना एवं योग शिविर

ओ.एस. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल कैथल में पाँच दिवसीय आर्य युवा वैदिक चेतना एवं योग शिविर का आयोजन किया गया, जिसका मुख्य उद्देश्य छात्रों का शारीरिक, बौद्धिक व चारित्रिक विकास करना था। शिविर विद्यालय के लगभग 300 छात्र छात्राओं ने भाग लिया। शिविर की मुख्य अतिथि के रूप में विद्यालय की प्रधानाचार्य तथा क्षेत्रीय निदेशिका श्रीमती सुमन निझावन ने शिरकत की और ध्वजारोहण के बाद शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा कि पढ़ाई के साथ–साथ छात्रों का सर्वांगीण विकास अति आवश्यक है। बच्चों में इस तरह के शिविर के माध्यम से परस्पर मेल–जोल, एक दूसरे के प्रति समर्पण, आत्मनिर्भर बनने की आदि की भावना पैदा होती है।

शिविर में सभी बच्चों ने प्रातः 6.00 बजे से सांय 6.00 बजे तक विभिन्न शारीरिक क्रियाएं, लेज़ियम, डम्बल, लाठी संचालन आदि गतिविधियों में उत्साह पूर्वक भाग लिया। बौद्धिक सत्र में बाहर से बुलाए गए विद्वान श्री सुश्रुत आर्य, श्री प्रमोद योगार्थी व श्री जसविन्द्र आर्य ने छात्रों का बौद्धिक विकास करने का प्रयास किया ओर शिविरार्थियों की ईश्वर, आत्मा, सत्य–असत्य आदि से संबंधित सभी शंकाओं का समाधान किया। विद्यालय की अध्यापिका द्वारा 16 संस्कारों का वैज्ञानिक महत्व भी शिविरार्थियों को बताया गया।

समापन समारोह के अंतर्गत शिविर के दौरान अनुभवी एवं प्रशिक्षित शिक्षकों से प्राप्त विभिन्न गतिविधियों को शिविरार्थियों ने अपने अभिभावकों एवं शिक्षकों के समक्ष बड़ी उत्कृष्टता से प्रदर्शित किया जिसकी सभी ने मुक्त कंठ से भूरि–भूरि प्रंशसा की।

समापन समारोह की मुख्य अतिथि विद्यालय की प्रधानाचार्या तथा क्षेत्रीय निदेशिका श्रीमती सुमन निझावन के प्रेरणादायक संबोधन के बाद शिविर के दौरान आयोजित विभिन्न गतिविधियों में विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कृत करने के बाद राष्ट्रीय प्रार्थना एवं ध्वजावतरण के शिविर के साथ शिविर का सफलतापूर्वक समापन हुआ।

डी.ए.वी. नाभा में वैदिक चेतना शिविर हुआ सम्पन्न

डी.ए.वी. सैंटनरी पब्लिक स्कूल नाभा में आर्य युवा समाज एवम् आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब के तत्वावधान में व विद्यालय की प्रधानाचार्या मीना मेहता की अध्यक्षता में छः दिवसीय वैदिक चेतना शिविर का समापन किया गया।

इस शिविर के आयोजन का मुख्य उद्देश्य बच्चों में अच्छे संस्कार के साथ आर्य विचारधारा को उत्पन्न करना था। शिविर में विद्यालय के लगभग 70 शिविरार्थियों ने भाग लिया। विद्यार्थियों को शिविर के दौरान महर्षि दयानन्द कृत यज्ञ विधि के सभी पावन मन्त्रों का स्मरण करवाया गया और हवन करने की विधि से परिचित कराया गया।

शिविर का प्रारम्भ हवन यज्ञ द्वारा मन्त्रोच्चारण के साथ किया गया, जिसमें बच्चों ने सस्वर मन्त्रों का उच्चारण कर यज्ञ में आहुतियां प्रदान कीं। प्रधानाचार्या मीना मेहता ने बताया कि हमें वैदिक विचारों को, अनुशासन को जीवन में अपनाना चाहिए। उन्होंने बच्चों को ओ३म् ध्वनि के बारे में भी जानकारी दी। पहले दिन बच्चों ने हवन करने की विधि, दूसरे दिन हवन मन्त्र व भजन, तीसरे दिन स्वास्थ्य और शारीरिक जानकारी, चौथे दिन श्वास के साथ ओ३म् उच्चारण विधि, पांचवें दिन मन्त्रों के कविता रूप को स्मरण किया। छठे दिन बच्चों ने जो कुछ सीखा उसे गतिविधि द्वारा करने का अभ्यास किया।

शिविर के दौरान 1 जून को विद्यालय परिवार ने मिलकर डी.ए.वी. स्थापना दिवस मनाया। शास्त्री रोहित आर्य ने बच्चों को डी.ए.वी. के इतिहास की जानकारी देते हुए बताया कि 132 वर्ष पूर्व इस संस्था की स्थापना विद्यालय के रूप में हुई। समापन पर छात्रों ने सेवा कार्य को समझते हुए नेकी का द्वार में कुछ कपड़ों का दान कर नर सेवा नारायण सेवा को जाना साथ ही प्रधानाचार्या मीना मेहता के साथ वृक्षारोपण द्वारा संसार को, पर्यावरण को बचाने का प्रण लिया।

डी.ए.वी. सैक्टर 14 फरीदाबाद में महात्मा हंसराज जी का जन्मदिवस

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सैक्टर 14 फरीदाबाद के प्रांगण में प्रातःकालीन सभा में डीएवी संस्थान के प्रथम प्रधानाचार्य व शिक्षा शास्त्री त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी का 154वाँ जन्मदिवस सोल्लास मनाया गया। इस अवसर पर कक्षा दसवीं के छात्रों ने यज्ञशाला में यज्ञ किया और महात्मा हंसराज जी के प्रिय भजनों को गाया किया।

मंच पर प्रार्थना में महात्मा हंसराज जी के प्रिय वेद मंत्र **"ओ३म विश्वानि देव..."** का पाठ किया एवं उनके त्यागमय जीवन पर छात्रों ने संभाषण प्रस्तुत किया। साथ ही उनके जीवन–वृत्त पर छात्र–छात्राओं ने बड़ी ही श्रद्धा व कुशलता से एक एकांकी का मंचन किया। सभी छात्रों पर इसका बहुत ही अच्छा प्रभाव पड़ा।

अन्त में विद्यालय के प्राचार्य श्री एस.एस. चौधरी ने छात्रों व शिक्षकों को इस शुभवसर पर बधाई एवं शुभकामनाएँ दीं और साथ ही महात्मा हंसराज के जीवन के कुछ प्रेरक प्रसंगों को सुनाकर उन्हें जीवन में धारण करने की प्रेरणा दी, जिससे विद्या का वास्तविक लाभ छात्रों सहित सभी शिक्षकों के जीवन में परिलक्षित हो सके।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**